सिद्धपरमेष्ठि-पूजाविधान

वंदित्तु सव्वसिद्धे धुवमचलमणोवमं गदिं पत्ते।

प्रकाशक
श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट
सोनगढ-३६४२५०

भगवानश्रीकुन्दकुन्द-कहानजैनशास्त्रमाला, पुष्प–१९७

श्री

सिद्धपरमेष्ठि-पूजाविधान

સહજ : रचयिता : ચિદાનંદ.

कविवर पण्डित श्री टेकचंदजी

: प्रकाशक :

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट,

सोनगढ-३६४२५०

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

प्रथम संस्करण :

वीर नि.सं. २५२४ वि.सं. २०५२ ई.स. १९९८

द्वितीय संस्करण : २०००

वीर नि.सं. २५३३ वि.सं. २०६३ ई.स. २००६

णट्ठट्ठकम्मबंधा अट्ठमहागुणसमण्णिया परमा।
लोयग्गट्ठिदा णिच्चा सिद्धा ते एरिसा होंति।

—भगवत्कुन्दकुन्दाचार्यदेव

अर्थ :—आठ कर्मके बन्धको जिन्होंने नष्ट किये हैं ऐसे, आठ महागुण सहित, परम, लोकमें अग्रमें स्थित और नित्य;—ऐसे वे सिद्ध होते हैं।

मूल्य : रू. 10=00

मुद्रक :
स्मृति ओफसेट
जैन विद्यार्थी गृह, सोनगढ-३६४२५०

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

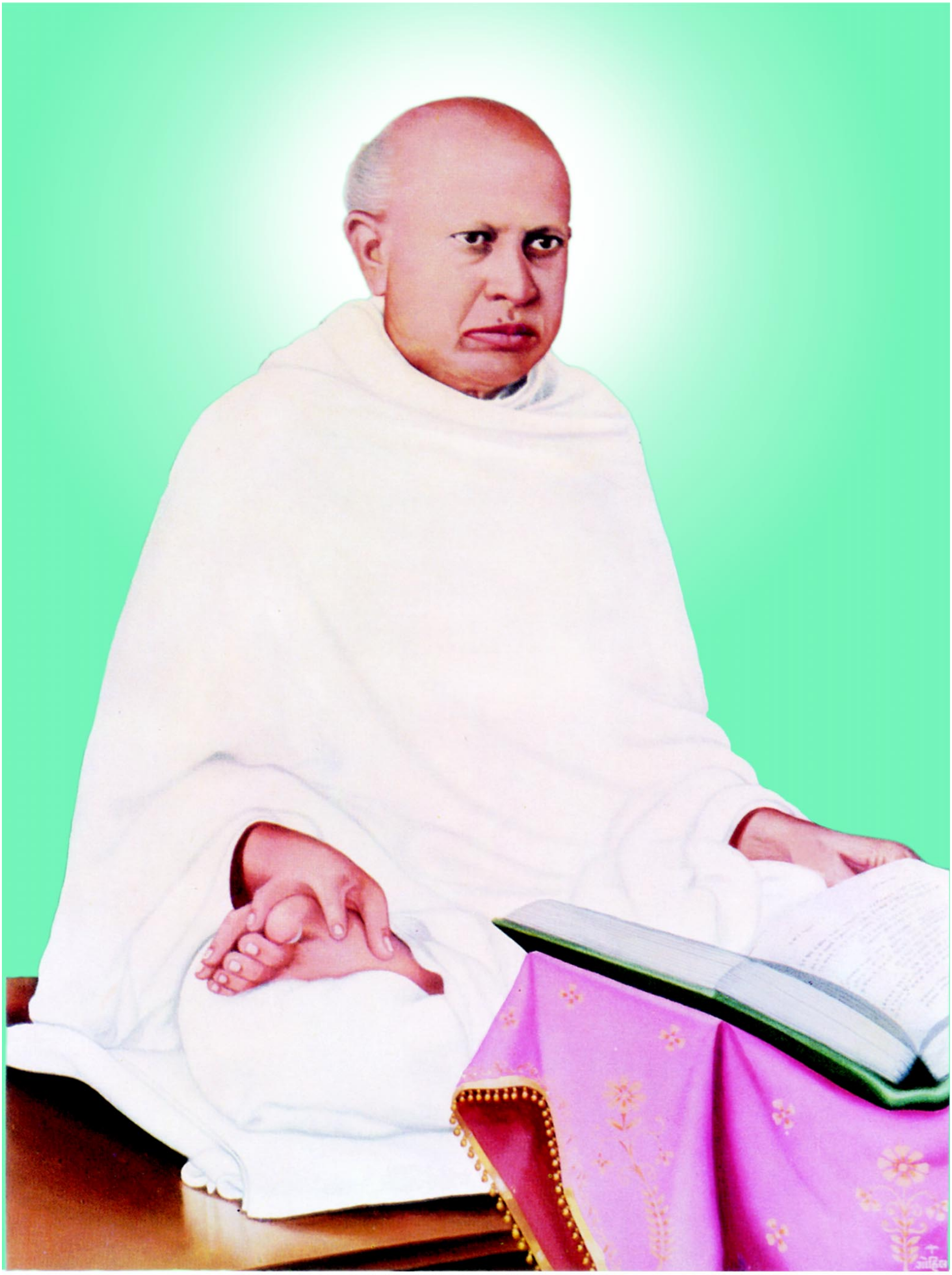

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

प्रकाशकीय निवेदन

अध्यात्मयुगस्रष्टा स्वात्मानुभवी सत्पुरुष पूज्य सद्गुरुदेव श्री कानजीस्वामीने 'तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा प्रकाशित दिगम्बर जैन धर्म ही सनातन सत्य है' यह युक्ति-न्यायसे सर्वप्रकार स्पष्टरूपसे समझाया है; मार्गकी खूब छानबीन की है। द्रव्यकी स्वतन्त्रता, द्रव्य-गुण-पर्याय, उपादान-निमित्त, निश्चय-व्ययहार, आत्माका शुद्ध स्वरूप, सम्यग्दर्शन, स्वानुभूति, मोक्षमार्ग इत्यादि सबकुछ उनके परम प्रतापसे इस काल सत्यरूपसे बाहर आया है। इन अध्यात्मतत्त्वोंके—गहन तथ्योंके-रहस्योद्घाटनके साथ साथ उन्होंने वीतराग देव-शास्त्र-गुरुकी सही पहिचान कराकर मुमुक्षुसमाज पर अनन्त उपकार किया है। उन्हींके सत्प्रतापसे ही मुमुक्षुसमाजमें जिनेन्द्रपूजा-भक्ति आदिकी सत्यप्रवृत्ति साभिरुचि, सोल्लास एवं नियमित चल रही है। वे स्वयं भी जिनेन्द्रभक्तिमें नियमितरूपसे उपस्थित रहते थे। उनके ही पुनित प्रभावसे सौराष्ट्रप्रदेश दिगम्बर जिनमंदिरों एवं वीतराग दिगम्बर जिनबिंम्बोंसे विभूषित हो गया है।

अध्यात्मसाधनाकी पवित्र तीर्थभूमि सुवर्णपुरी (सोनगढ)में परमपूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामीके भक्तरत्न स्वानुभवविभूषित धन्यावतार प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चम्पाबेनकी जिनेन्द्रभक्तिभावभीगी प्रशस्त प्रेरणासे प्रसंगोपात अनेकविध मण्डलविधानपूजाऐं होती रहतीं हैं। और इसके संदर्भमें ट्रस्टकी ओरसे अनेकविध मण्डलविधानकी पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। उसी श्रेणीमें यह 'श्री सिद्धपरमेष्ठि-पूजाविधान' प्रकाशित करते हुए प्रसन्नता अनुभूत हो रही है।

यह 'श्री सिद्धपरमेष्ठी-पूजाविधान' कविवर पण्डित श्री टेकचंदजी द्वारा रचित 'कर्मदहन-पूजाविधान'का ही नामान्तर है। इसका यह प्रस्तुत संस्करण, जबलपुर (म.प्र.)के सरल जैन ग्रन्थ भण्डार द्वारा प्रकाशित 'श्री बृहत् जैन विधान संग्रह'के अन्तर्गत 'श्री कर्मदहन-पूजाविधान'के आधारसे प्रकाशित किया गया है। एतदर्थ ट्रस्टकी प्रकाशनसमिति उक्त प्रकाशकके प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करती है। इस नूतन प्रकाशनमें अन्य कवियोंकी कतिपय सिद्धपूजायें एवं अन्य पूजा भी प्रकाशित की गई हैं।

जीव जहाँ तक कर्म और नोकर्मसे सम्बद्ध है वहाँ तक वह 'संसारी' है और जब कर्म-नोकर्मसे सम्पूर्ण मुक्त हो जाता है तब वह 'सिद्ध' कहा जाता है। कर्मके मूल आठ भेद हैं—(१) ज्ञानावरणीय, (२) दर्शनावरणीय, (३) मोहनीय, (४) वेदनीय, (५) आयुष्य, (६) नाम, (७) गोत्र और (८) अन्तराय। इन आठों कर्मोंके उत्तर भेद सब मिलाकर १४८ हैं। १४८ कर्मप्रकृतियोंसे मुक्त हो गये होनेसे सिद्धपरमात्माकी, इनसे मुक्तिके अर्घो द्वारा पूजा की गई है। इसे ही 'श्री सिद्धपरमेष्ठि-पूजाविधान' ऐसा अभिधान दिया गया है।

पं. श्री टेकचंदजीने 'पंचमेरु-नंदीश्वरविधान', 'षोडशकारणभावना-विधान' 'त्रिलोकसारविधान', 'दशलक्षणविधान' और 'रत्नत्रयविधान' भी बनाये हैं, जो मुद्रित हो चुके हैं।

आशा है कि इस 'श्री सिद्धपरमेष्ठि-पूजाविधान'के प्रकाशनसे मुमुक्षु समाज अवश्य लाभान्वित होगा।

वि.सं. २०६६
पूज्य बहिनश्री चंपाबेनका
७८ वाँ सम्यक्त्वजयंती महोत्व
ता. १०-३-२०१०

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दि. जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट,
सोनगढ-३६४२५०

अनुक्रमणिका

अष्टकर्ममुक्त सिद्धपूजा ---------- 7
ज्ञानावरणीमुक्त सिद्ध-पूजा ---------- 10
दर्शनावरणीयमुक्त सिद्ध-पूजा ---------- 11
वेदनीयकर्ममुक्त सिद्ध-पूजा ---------- 14
मोहनीयकर्ममुक्त सिद्ध-पूजा ---------- 14
आयुष्यकर्ममुक्त सिद्ध-पूजा ---------- 21
नामकर्ममुक्त सिद्ध-पूजा ---------- 22
गोत्रकर्ममुक्त सिद्ध-पूजा ---------- 39
अन्तरायकर्ममुक्त सिद्ध-पूजा ---------- 40
समुच्चय जयमाला ---------- 41
सिद्धपरमेष्ठि पूजा ---------- 44
श्री सिद्धपरमेष्ठि-पूजा ---------- 47
श्री सिद्धपरमेष्ठि-पूजा ---------- 49
श्री सिद्धपरमेष्ठि-पूजा ---------- 52
श्री सिद्ध-पूजा ---------- 57
श्री सिद्ध पूजा ---------- 60
सम्यक्दर्शन}पूजा ---------- 64
सम्यक्ज्ञान}पूजा ---------- 66
सम्यक् चारित्र पूजा ---------- 68
रत्नत्रय}पूजा ---------- 70
समुच्चय जयमाला ---------- 71
श्री धातकीविदेह-भावीजिनपूजा ---------- 72
श्री महावीर जिन पूजा ---------- 77

ते मे तिहुवणमहिदा सिद्धा सुद्धा णिरंजणा णिच्चा।
दिंतु वरभावसुद्धिं दंसण णाणे चरित्ते य॥

—भगवत्कुन्दकुन्दाचार्यदेव

*

भगवन्त सिद्धो–त्रिजगपूजित, नित्य, शुद्ध, निरंजना।
—वर भावशुद्धि दो मने दृग, ज्ञान ने चारित्रमां॥

*

अर्थ :—सिद्ध भगवान—कि जो त्रिजगपूजित, नित्य, शुद्ध और निरंजन हैं वे—मुझे दर्शन, ज्ञान और चारित्रमें उत्कृष्ट भावशुद्धि देवें।

*

ॐ

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

सिद्धपरमेष्ठि-पूजाविधान

(कविवर पं. टेकचंदजीकृत)

अष्टकर्ममुक्त सिद्धपूजा

समुच्चय पूजन

(अडिल्ल छन्द)

लोक-शिखर तन छाँड़ि अमूरति ह्वै रहे।
चेतन ज्ञान-स्वभाव ज्ञेयतैं भिन्न भये॥
लोकालोक सु काल तीन सब विधि घनी।
जानी सो जिनदेव जजों बहुथुति ठनी॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वानम्)।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्)।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्)।

अष्टक

(चाल जोगीरासा)

अजर अखंड सदा अविनाशी, तीन लोक सिरताजा।
हैं सर्वज्ञ अनाकुल मूरति, तीन भुवन के राजा॥
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूजों भक्ति उपाई।
क्षीरोदधि-जल कनक-झारिका, निर्मल भर करि भाई॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

वातवलय तनुवात तीसरो, तामें तिनि थिति कीनी।
आवागमन न रह्यो भव भीतर, अपनी परिणति चीनी॥
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूजों भक्ति उपाई।
बावन चंदन घसि जल निर्मल, अलि-पंकति सुखदाई॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

जा तनुतैं शिवथान पधारे, तातें कछुक घटाई।
है विंजन-परजाय ज्ञान-घन, दुःख नहि पइये भाई॥
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, सिर धरि हाथ नवावुं।
अक्षततें पूजा तिन केरी, करि करि धरि सुर गाऊँ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट करम-रज रंच न पइये, निर्मल अति अघहारी।
तिनके चरण-कमल प्रति, प्रतिदिन होवे धोक हमारी॥
सुरतरु-फूल महा गंधथानक, तिनके चरण चढ़ाऊँ।
ता फल नाशे मदन महादुठ, और कहा जस गाऊँ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिसरूपी निज गुन-गर्भित, कर्मकलंक न पइये।
ताकी थुति हरि सुर से गावें, ता फल शिव-सुख लईये॥
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, सुध नैवेद्य चढ़ाऊँ।
ता फल होय क्षुधा नहिं कबहूं, थिर है जिनगून गाऊँ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक पदारथ सब तिन, ज्ञान विषें झलकाये।
तिन जाननमें खेद न उपजे, दर्पणसम समझाये॥
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, दीपक मनमें लाऊँ।
ता फल नाश अज्ञान तनो है, पूजन फेर न आऊँ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन निजभाव बनाये, शुक्लध्यान करि बहनी।
अष्टकरम शुभ धूप बनाई, हरष हरष करि दहनी॥
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूजों भक्ति उपाई।
ताके फल शिवपदवी लहिये, काल नान्त सुखदाई॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमगति तिनको सुधवासो, और थान नहिं जावें।
ऐसो सुख पायो तँह थिति करि, और ठाम नहिं जावें॥
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूजों भक्ति उपाई।
ताके फल शिवको फल लहिये, और कहा अधिकाई॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टगुणा तिनके मुख गाये, गुण अनंत के धारी।
नाम लिये नित मंगल होवे, तिन पद धोक हमारी॥
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूजों भक्ति उपाई।
अष्ट कर्म तातैं क्षय पावें, अष्ट गुणोत्सव थाई॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

पूजा तिनकी करत ही, सिद्ध होय सब काम।
तातैं वसुविध द्रव्य ले, पूजों सब सिध-धाम॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणीमुक्त सिद्ध-पूजा

(गीतिका छंद)

ज्ञानावरणी पञ्च विध है, ज्ञानगुन जियको हर्यो।
तातें सुजिय बिन ज्ञान है, बहु काल चिर चउगति फर्यो।।
ते ज्ञानवरणी घाति निजगुन, ज्ञानकों निरमल कियो।
सो सिद्ध चेतन ज्ञान-सुखपिंड, जन्मवनकों छेदियो।।१।।

ॐ ह्रीं पंचप्रकारज्ञानावरणीयरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीन शत छत्तीस विध, मतिज्ञान है, के परणयो।
मतिज्ञानवरणी ज्ञान मति कों, घातके जयपद लयो।।
ते ज्ञानवरणी घाति निजगुन, ज्ञानकों निरमल कियो।
सो सिद्ध चेतन ज्ञान-सुखपिंड, जन्मवनकों छेदियो।।२।।

ॐ ह्रीं षट्‌त्रिंशदधिक त्रिशतप्रकारमतिज्ञानावरणीयविनाशकाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो अर्थतें जानें अर्थान्तर, ज्ञान श्रुत सो वरणयो।
सो अंग पूरव दोय विध श्रुत, ज्ञानवरणी सो जयो।।
ते ज्ञानवरणी घाति निजगुन, ज्ञानकों निरमल कियो।
सो सिद्ध चेतन ज्ञान-सुखपिंड, जन्मवनको छेदियो।।३।।

ॐ ह्रीं द्विप्रकार श्रुतज्ञानावरणीयरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जे अवधि तीन प्रकार देशा, सर्व परमा जानिये।
इन घाति है सो अवधिवरणी, अवधित्रय विधि हानिये।।
ते ज्ञानवरणी घाति निजगुन, ज्ञानको निरमल कियो।
सो सिद्ध चेतन ज्ञान-सुखपिंड, जन्मवनको छेदियो।।४।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरणीयरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मनज्ञान ऋजु अरु विपुल दोविध औरके मनकी लखे।
इमि घात मनपरजय सवरणी, ज्ञानकी घातक अखे।।

ते ज्ञानवरणी घाति निजगुण, ज्ञानको निरमल कियो।
सो सिद्ध चेतन ज्ञान-सुखपिंड, जन्मवनकों छेदियो॥५॥

ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरणीयरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

लोक सर्व त्रय कालकी, पर्याय केवलमें रही।
इस ज्ञानघातक वरणी केवल, सर्वघाती वरणही॥
ते ज्ञानवरणी घाति निजगुण, ज्ञानकों निरमल कियो।
सो सिद्ध चेतन ज्ञान-सुखपिंड, जन्मवनको छेदियो॥६॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरणीरयहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वरनि पांचो ज्ञानमल धा, ज्ञान सब निज सुध कर्यो।
छाँड़ि जड़ तन लखि अपावन, मूरती बिन तन धर्यो॥
अब न है जामन मरन करते, ज्ञान अविचल तिन ठयो।
ते नमूं कर शिरधारि पल पल, मनुषभव हम फल लयो॥७॥

ॐ ह्रीं पञ्चप्रकारज्ञानावरणीयरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सहज सिद्धानंद.

दर्शनावरणीयमुक्त सिद्ध-पूजा

(अडिल्ल छन्द)

नौ दर्शनकी घात करनहारी प्रकृति।
तिन घाते जियकी अनन्त पेखन शकति॥
दर्शन घातनहारी, तिन घाती सही।
ता सिध पद थुति धारि, नमू त्रिभुवन मही॥१॥

ॐ ह्रीं नवप्रकारदर्शनावरणीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

चक्षु थकी अवलोकन दर्शन-चखु कह्यो।
या दर्शनकों हने सु चक्षुवरणी चह्यो॥
दर्शन घातनहारी, तिन घाती सही।
ता सिध पद थुति धारि, नमूं त्रिभुवन मही॥२॥

ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरणीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

चक्षु बिना नोइन्द्री मनतैं जो लखे।
सो अचक्षुदृश जान, घाति वरणी अखै॥
दर्शन घातनहारी, तिन घाती सही।
ता सिध पद थुति धारि, नमूं त्रिभुवन मही॥३॥

ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरणीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

अगली पिछली लखे अवधिदर्शन न कह्यो।
अवधिदर्शनावरणी ताको क्षय लह्यो॥
दर्शन घातनहारी, तिन घाती सही।
ता सिध पद थुति धारि, नमूं त्रिभुवन मही॥४॥

ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरणीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

लोकालोक निहार, दरश केवल कह्यो।
केवलदर्शनावरणी यह गुन जय लह्यो॥
दर्शन घातनहारी, तिन घाती सही।
ता सिध पद थुति धारि, नमू त्रिभुवन मही॥५॥

ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरणीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(चाल जोगीरासा)

निद्रा अल्प सु होय जीवकों, हाँक दिये उठि आवे।
निद्रानामक कर्म यहू है, या वसि चेतन थावे॥
ऐसी निद्रा घाति आपनी, शक्ति सकल परकाशी।
ते सिध सुख-सागरमें गर्भित, तीन लोक गं भाषी॥

ॐ ह्रीं निद्रादर्शनावरणीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

निद्रानिद्राकर्म-उदै जिय, सेन बहुत वसि आवे।
अपनी शक्ति गमाय दर्श-बल, मूरति जड़सी थावे॥
ऐसी निद्रा घाति आपनी, शक्ति सकल परकाशी।
ते सिध सुख-सागरमें गर्भित, तीन लोक गं भाषी॥

ॐ ह्रीं निद्रानिद्रादर्शनावरणीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

प्रचलाकर्म उदय जब होवे, जीव चेत युत सोवे।
तुच्छ शोर थकी तत्क्षण ही, सुनकरि चेत सु होवे॥
ऐसी निद्रा घाति आपनी, शक्ति सकल परकाशी।
ते सिध सुख-सागरमें गर्भित, तीन लोक गं भाषी॥

ॐ ह्रीं प्रचलादर्शनावरणीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

प्रचलाप्रचला होय उदय तब, नीर मुखै अँग हाले।
अर्घ मुँदे तो अर्घ खुले चखु, जीव जोर नहिं चाले॥
ऐसी निद्रा घाति आपनी, शक्ति सकल परकाशी।
ते सिध सुख-सागरमें गर्भित, तीन लोक गं भाषी॥

ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचलादर्शनावरणीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

कर्म स्त्यानकगृद्धि उदयतैं, जोर होय अधिकाई।
भूलै निजसुध काज करे बहु, ज्ञान न रञ्च रहाई॥
ऐसी निद्रा घाति आपनी, शक्ति सकल परकाशी।
ते सिध सुख-सागरमें गर्भित, तीन लोक गं भाषी॥

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धिदर्शनावरणीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(दोहा)

दर्शनवरनी नौ प्रकृति, घाति भये सिध सोय।
ते सब अर्घ्य चढ़ायके, पूजों मन-मद खोय॥

ॐ ह्रीं नवप्रकारदर्शनावरणीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यम्।

वेदनीयकर्ममुक्त सिद्ध-पूजा

(पद्धरि छन्द)

यहु कर्मवेदनी दोय भेव, या वस जिय सुखदुख लहे स्वमेव।
यह कर्म घात शिवथान पाय, ते सिद्ध नमू मन वचन काय॥

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जब साताकर्म उदय सु होय रागी जिय सुखमाने जुहोय।
यह कर्म घात शिवथान पाय, ते सिद्ध नमू मन वचन काय॥

ॐ ह्रीं सातावेदनीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जब उदय असाता होय आय, जिय मोह-विवश थिरता न पाय।
यह कर्म घात शिवथान पाय, ते सिद्ध नमू मन वचन काय॥

ॐ ह्रीं असातावेदनीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

ये कर्म मोह-बल स्वफलदाय बिन मोह विफल या उदय थाय।
सुख दुखदायक ये सर्वांग धारि, यह कर्म जयो ते जगत तारि॥

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

मोहनीयकर्ममुक्त सिद्ध-पूजा

(कडखा छन्द)

मोहने जगतके जीव सब जय लये,
जड़ विषें ममत्व सबको करायो।
जीव भी मोह-वश आपदा भोगके,
नृत्य करि चार गति देखि आयो॥

इन्द्र धरणेन्द्र चक्री सबै मोहकी,
सूरता देख भागे सबै ही।
यों मोह जानैं जयो धन्य ते जन भयो,
अर्घ्य ले चर्ण ताके जजें ही॥१॥

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

क्रोध-वश आप उर दाहि अनिकों दहै,
नांहि बहु काललों संग छोरे।
रेख पाषाणकी क्रोध अनन्तानको,
यो रहे धर्मतें नांहि जोरे॥
जीव सब जगतके जेर याने किये,
मोक्ष-मग रोकि मद आप छायो।
तासकों घात शिव राह लीन्हीं सरल,
छाँड़ि भव-गैल सिध-थान धायो॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिक्रोधकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

मान अनन्तान थँभ भयो पाषाण ज्यों,
फूटि हैं, नेक नहीं नमन ठाने।
या उदय जीव टेड़ो रहे अकडिकें,
वायकी ब्याधि ज्यों रीत आने॥
जीव सब जगतके जेर याने किये,
मोक्ष-मग रोकि मद आप छायो।
तासकों घात शिव राह लीन्हीं सरल,
छाँड़ि भव-गैल सिध-थान धायो॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिमानकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

कर्म माया उदै जीव परकों छले,
बांस जड ज्यों हिये गाँठि सारे।

वचन औछे कहै दोष सारै लहे,
याहि वश जीव तृक्रूराह धारे।
जीव सब जगतके जेर याने किये,
मोक्ष-मग रोकि मद आप छायो।
तासकों घात शिव राह लीन्हीं सरल,
छाँड़ि भव-गैल सिध-थान धायो॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिमायाकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

लोभ अनन्तान-वस जीव निज प्राण दे,
नांहि परभावसों प्रीति मोरे।
वरन मँजीठ ज्यों ठाम नांहि तजे,
याहि वस जीव भव मांहि दौरे।
जीव सब जगतके जेर याने किये,
मोक्ष-मग रोकि मद आप छायो।
तासकों घात शिव राह लीन्हीं सरल,
छाँड़ि भव-गैल सिध-थान धायो॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिलोभकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(चौपाई छन्द)

या वस जीव अनन्ते काल, आपा-परको लयो न ताल।
यह शिव-मारग घातनहार, याकों हरे सिद्ध निरधार॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

हल रेखावत क्रोध सुजान, अप्रत्याख्यान संयमकी हान।
याकों हने महाभट सोय, ते सिध पूजें सब सिध होय॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणीयक्रोधकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

मान अप्रत्याख्यान सु भाव, अस्थि-थंभवत याको दाव।
याकों हने महाभट सोय, ते सिध पूजें सब सिध होय॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणीयमानकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

माया हिरणसींग-बल जिसी, सूधी होय ज्ञानमें फँसी।
याकों हने महाभट सोय, ते सिध पूजें सब सिध होय॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणीयमायाकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

लोभ कसूंभ-रंग सम जान, याके उदय चाह परमान।
याको हने महाभट सोय, ते सिघ पूजें सब सिध होय॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणीयलोभकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(अडिल्ल छन्द)

ये चारों भट जान अप्रत्याख्यानके,
हानि करें अणुव्रत तनी दुख थानके।
याकों हनि सिध भये लोक मंगल लयो,
तिनको अर्घ्य चढ़ाय जजों भव धनि भयो॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(वेसरी छन्द)

प्रत्याख्यान रेख-रज जानों, क्रोध यहै मुनिपदको हानो।
याकों घाते सो शिव पावे, लोकपूज सिध नाम कहावे॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणीयक्रोधकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

काष्ठथंभवत नरमी जामें, प्रत्याख्यान मान बल तामें।
याकों घाते सो शिव पावे, लोकपूज सिध नाम कहावे॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणीयमानकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

महिषशृङ्ग वत माया सोई, प्रत्याख्यान चारमें होई।
याकों घाते सो शिव पावे, लोकपूज सिध नाम कहावे॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणीयमायाकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

प्रत्याख्यान लोभ केस रसो, ताके उदय जीव अघ करिसो।
याकों घाते सो शिव पावे, लोकपूज सिध नाम कहावे॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणीयलोभकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(दोहा)

चौ भट प्रत्याख्यानके, इन थिति सब व्रत हानि।
इनको क्षयकरि सिध भये, ते पूजों अघ भानि॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(पद्धरि छन्द)

संज्वलन-क्रोध जल-रेख जोय, याके अँश केवलगम्य होय।
मुनिहू पै जोर करे सुजान, याकों हति सिध पायो स्वथान॥

ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोधकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

संज्वलन-मान थँभ वेत्र जो, बड़पदको घाते मंद होय।
मुनिसे पद यातें जेर जान, याकों हति सिध पायो स्वथान॥

ॐ ह्रीं संज्वलनमानकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

माया संज्वलन वृषसींग जोय, मुनिवरमें बैठा दीन होय।
शिवके मारग नहि देय जान, याकों हति सिध पायो स्वथान॥

ॐ ह्रीं संज्वलनमायाकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

रँगपतंग जे संज्वलन-लोभ, जिन पाड्यो शिवमगमांहि छोभ।
ताकों दल निर्जरें नाहि जान, याकों हति सिध पायो स्वथान॥

ॐ ह्रीं संज्वलनलोभकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

ये संज्वलन भट चार जोय, जिन बिन इन जय पावे न कोय।
ये यथाख्यात मग-हरनवान, इनकों हत सिध पायो स्वथान॥

ॐ ह्रीं संज्वलनकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(चाल–सुन भाई रे)

हास्य उदय हास्य होय, सुन भाई रे।
संजमको परिहार, चेत मन भाई रे।
याकों घाति जु शिव गये, सुन भाई रे।
सिद्ध जजों भवतार, चेत मन भाई रे॥२२॥

ॐ ह्रीं हास्यकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

रति प्रकृतिके जोरसों, सुन भाई रे।
पुद्गल सदा सुहाय, चेत मन भाई रे।
याकों घाति जु शिव गये, सुन भाई रे।
ते सिध सेऊं भाय, चेत मन भाई रे।।२३।।

ॐ ह्रीं रतिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

अरति कर्मके जोरसों, सुन भाई रे।
अरति वस्तुसों होय, चेत मन भाई रे।
याको हरि शिवथल गये, सुन भाई रे।
ते सिध-थुति सिध होय, चेत मन भाई रे।।२४।।

ॐ ह्रीं अरतिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

शोक कर्म जब बल करे, सुन भाई रे।
परिणति शोक कराय, चेत मन भाई रे।
याकों घाति जु सिध भये, सुन भाई रे।
पूजों सो चित ल्याय, चेत मन भाई रे।।२५।।

ॐ ह्रीं शोककर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

भय कर्म उदय जब होय, सुन भाई रे।
तब जिय उर कंपाय, चेत मन भाई रे।
याकों घाति सु सिध भये, सुन भाई रे।
पूजों सो चित ल्याय, चेत मन भाई रे।।२६।।

ॐ ह्रीं भयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

कर्म जुगुप्सा बल उदय, सुन भाई रे।
पर लखि गिलान, चेत मन भाई रे।
ताकों तिन घात्यो सही, सुन भाई रे।
पूजों सो चित ल्याय, चेत मन भाई रे।।२७।।

ॐ ह्रीं जुगुप्साकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

पुरुषवेद जब बल करे, सुन भाई रे।
होय नारि उर चाह, चेत मन भाई रे।
या हति तिन शिवपद लह्यो, सुन भाई रे।
पूजों सो शिवथान, चेत मन भाई रे॥२८॥

ॐ ह्रीं पुरुषवेदकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

वेद जु स्त्रीके उदय, सुन भाई रे।
पुरुष चाह उर होय, चेत मन भाई रे।
याकों हनि जे शिव गये, सुन भाई रे।
ते पूजों सिध जोय, चेत मन भाई रे॥२९॥

ॐ ह्रीं स्त्रीवेदकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

वेद नपुंसकके उदय, सुन भाई रे।
नर तिय जुगपत भाय, चेत मन भाई रे।
ताकों घाति जो शिव गये, सुन भाई रे।
पूजों सो सिध आय, चेत मन भाई रे॥३०॥

ॐ ह्रीं नपुंसकवेदकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

ये नव कर्म हास्यादि हैं, सुन भाई रे।
शिवमग रोकनहार, चेत मन भाई रे।
इन हर जे शिव-थल गये, सुन भाई रे।
अर्घ्य जजों सिध सार, चेत मन भाई रे॥३१॥

ॐ ह्रीं हास्यादिकनवनोकषायकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(अडिल्ल छन्द)

मिथ्या-वश पर आप, एक कर जानिया।
चौ गति धरि धरि स्वांग, आप कर मानिया।
याके उदय अज्ञान, मोक्षवांछा तजी।
ताकों हत सिध भये, अर्घ्य जाको जजी॥३२।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(जोगीरासा छन्द)

मिश्र मिथ्यात्व उदय जियके उर, द्विविध स्वांग सो होवे।
नांहि जथावत सम्यक् जाके, नांहि मिथ्यात्व सु जोवे।
या वश जीव अभय नहिं होवे, नाहिं मोक्षपद पावे।
याकों घाते सो शिव-परने, ताकों अर्घ्य चढ़ावे।।३३।।

ॐ ह्रीं मिश्रमिथ्यात्वकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

सम्यक्परकति कर्म उदय तैं, क्षय-उपशम दृढ़ हट्टो ही।
देव-धर्म-गुरुमें अपनायत, वृष जिन सुखदा सो ही।
शांतिनाथ जिन शांति करत है, ऐसी भाँति विचारे।
याकों घात करे सो सिध है, सो है शरण हमारे।।३४।।

ॐ ह्रीं सम्यक्प्रकृतिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

दर्शनमोह तनी थिति कोड़ा, -कोडी सत्तर होई।
चारितमोह तने वश संयम, धार सके नहिं कोई।।
यों ही मोह महाभट या वश, जीव जगतको वासी।
याकों घाति गये शिव-थानक, ते पूजों थिति भाषी।।३५।।

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

आयुष्यकर्ममुक्त सिद्ध-पूजा

(गीता छन्द)

आयु-कर्मवशाय आतम, खोड़ ज्यो तनमें रहे।
नर-देव-नारक-पशूकी थिति, भोगके वपुकों जहे।।
आयु पूरी खिरइ नहिं तन, भोग सुख-दुख बावरे।
यह आयुकर्म हर गये शिवपुर, ते जजों करि चाव रे।।

ॐ ह्रीं आयुष्यकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

देव आयू उदय तब तन, देवमें थिति जिय करे।
थिति भये पूरी एक पल तिस, ठाम नहिं थिरता धरै।।
करि है उपाय अनेक विधिसों, लगे नाहीं दाव रे।
यह आयुकर्म हर गये शिवपुर, ते जजों करि चाव रे।।

ॐ ह्रीं देवायुष्ककर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

मनुष आयु वशाय आतम, तन विषें सुख दुख भरे।
पूरी भए थिति एक छिन फिर, नहीं तहँ धीरज धरे।।
रैनदिन वर्षाऽरु गर्मी, शीत नाहिं लगावरे।
यह आयुकर्म हर गये शिवपुर, ते जजों करि चाव रे।।

ॐ ह्रीं मनुष्यायुष्ककर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

आयु तिर्यक् कर्मके वश, जीव पशु-तनमें बँध्यो।
पंच थावर विकलत्रय, पंचेन्द्रिय द्वय विधि हो सँध्यो।।
लहे दुख बहु शीत गरमी, भगन नाहिं उपावरे।
यह आयुकर्म हर गये शिवपुर, ते जजों करि चाव रे।।

ॐ ह्रीं तिर्यगायुष्ककर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

पाप परिणति ठान नरककी, आयुवश आतम पर्यो।
दुख सहे छेदन-भेदनादिक, तडन-ताड़नमें फिर्यो।।
नहिं कोई एक उपाय दीखे, आयुवश जहँ जावरे।
यह आयुकर्म हर गये शिवपुर, ते जजों करि चाव रे।।

ॐ ह्रीं नरकायुष्ककर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

यों कर्म चारों आयु हर, विन काय त्रिभुवनपति भये।
तनुवातमें तिन वेढ़ि तिष्ठे, काय धरनेतें गये।।
ऐसे अनन्तान्त सिध इक, एक सिधमें राजि हैं।
पूजों अरघ धरि हरष उरमें, सिद्धिके फल काज हैं।।६।।

ॐ ह्रीं आयुष्ककर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

✻

नामकर्ममुक्त सिद्ध-पूजा

(चौपाई छन्द)

नव्वै तीन नाम भट जोय, या वश जीव स्वांग बहु होय।
याको हते बिना शिव नांहि, हत्यो नाम ते सिद्ध कहांहि॥१॥

ॐ ह्रीं त्रिनवतिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

करड़ी परकृति जब बल करे, जीव तबै तन काठो करे।
याको हरि शिवथानक लह्यो, तिनको अर्घ्य जजों नित ठयो॥२॥

ॐ ह्रीं कठोरनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

नरम करम तब ही बल करे, सो जिय काया मृदु अति धरे।
यामें वसि जिय सुख दुख पाय, याकों हरे सिद्ध थल जाय॥३॥

ॐ ह्रीं मृदुनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

उष्ण कर्म-वश आतम भयो, तब तन उष्णरूप धर लयो।
याको हते बिना शिव नांहि, हत्यो नाम ते सिद्ध कहांहि॥४॥

ॐ ह्रीं उष्णनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

शीत शरीर लहे जिय सोय, ताके शीत-करम बल होय।
याको हते बिना शिव नांहि, हत्यो नाम ते सिद्ध कहांहि॥५॥

ॐ ह्रीं शीतनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

हलको तन जाके है सही, हलकी प्रकृति उदै तिन लही।
याको हते बिना शिव नांहि, हत्यो नाम ते सिद्ध कहांहि॥६॥

ॐ ह्रीं लघुनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

भारी तन पाये जिय सोय, ताके भारि कर्मरस होय।
याको हते बिना शिव नांहि, हत्यो नाम ते सिद्ध कहांहि॥७॥

ॐ ह्रीं गुरुनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

रूखो कर्म उदय जब होय, जीव धरे तन रूखो सोय।
याको हते बिना शिव नांहि, हत्यो नाम ते सिद्ध कहांहि॥८॥

ॐ ह्रीं रुक्षनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

कर्म चीकनो जब रस देय, ताके उदय चिकन तन लेय।
याको हते बिना शिव नांहि, हत्यो नाम ते सिद्ध कहांहि॥९॥

ॐ ह्रीं स्निग्धनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(दोहा)

खाटी प्रकृति उदय थकी, खाटो तन जिन पाय।
ताकों घाते सिध भये, पूजों अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं आम्लनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

मिष्टकर्म बल जब करे, जीव मधुर तन पाय।
ताकों घाते सिध भये, पूजों अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं मिष्टनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

कटुक-कर्म रस दे जबै, जीव कटुक तन पाय।
ताकों घाते सिध भये, पूजों अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं कटुकनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

उदय कसायल कर्मके, काय कसायल थाय।
ताकों हनि शिवथल गये, पूजों अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं कसायलनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

काय तिकत जिय तब धरे, तिकतकर्म रस थाय।
ताकों घाते सिध भये, पूजों अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं तिक्तनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(सोरठा)

लालकर्म रस होय, तब जिय सुर्ख शरीर ले।
ताकों घाते सोय, ते सिध पूजों अर्ध्यसों॥

ॐ ह्रीं अरुणनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

हरित कर्म फल जोय, काय सबज ताको बने।
ताकों घाते सोय, ते सिध पूजों अर्ध्यसों॥

ॐ ह्रीं हरितनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

श्यामकर्म फल होय, तब जिय तन कालो लहे।
ताकों घाते सोय, ते सिध पूजों अर्ध्यसों॥

ॐ ह्रीं श्यामनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

श्वेतकर्म बल जोय, उज्ज्वल तन तब पाइये।
ताकों घाते सोय, ते सिध पूजों अर्ध्यसों॥

ॐ ह्रीं श्वेतनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

पीतकाय तब होय, पीतकर्म तँह बल करे।
ताकों घाते सोय, ते सिध पूजों अर्ध्यसों॥

ॐ ह्रीं पीतनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(वीरजिनंदकी चाल)

कर्म सुगन्ध उदै बने जी, तन आकार सुगन्ध।
ताकों हनि शिवथल गये जी, काट कर्म दुख फंद
जी भाई, सिद्ध सबै सुखदाय॥

ॐ ह्रीं सुगन्धनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

दुर्गन्ध तन ताको बने जी, दुर्गन्ध कर्म बल होय।
ताकों हनि शिवथल गये जी, काट कर्म दुख फंद
जी भाई, सिद्ध सबै सुखदाय॥

ॐ ह्रीं दुर्गन्धनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(अडिल्ल छन्द)

अस्थि नसा नाराच वज्रके जो लहे,
वज्रवृषभनाराच काय ताकों कहे।
यह ही काय सो पाय मगन होके रहे,
इसे काटि सिध भये जजें तिन अघ दहे॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहनननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

कीली अस्थि सु दोय वज्र कैसे लहे।
वज्रनाराच सु सँहनन ताकों श्रुति कहे॥
यह ही काय सो पाय मगन होके रहे,
इसे काटि सिध भये जजें तिन अघ दहे॥

ॐ ह्रीं वज्रनाराचसंहनननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

वज्रमयी हों हाड़ कर्म ता ह्वैके उदै।
बेंड़ा अरु नाराच वज्रवत् हों जुदे।
यह ही काय सो पाय मगन होके रहे,
इसे काटि सिध भये जजें तिन अघ दहे॥

ॐ ह्रीं नाराचसंहनननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

कील नसें अरु हाड़ वज्र के ना कहे।
अर्धकीलिका संधि विषें दिढ़के रहे॥
यह ही काय सो पाय मगन होके रहे,
इसे काटि सिध भये जजें तिन अघ दहे॥

ॐ ह्रीं अर्धनाराचसंहनननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

कीली रहित जु हाड़, संधि ता तन विषें।
अस्थि तनों बहु गाढ़, परस्पर धुनि अखै॥
यह ही काय सो पाय मगन होके रहे,
इसे काटि सिध भये जजें तिन अघ दहे॥

ॐ ह्रीं कीलकसंहनननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जुदे जुदे ह्वै हाड़, नसनितैं दिढ़ भये।
फाटिक तन तिन भार, रसी जिमि करि दये।
यह ही काय सो पाय मगन होके रहे,
इसे काटि सिध भये जजें तिन अघ दहे॥

ॐ ह्रीं स्फटिकसंहनननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(चाल---जोगीरासा की)

अङ्गोपाङ्ग सुघाट सकल अँग, जैसो जिन-धुनि गायो।
सुन्दर काय सुहावे सबको, पुण्य जोगते पायो॥
सो संसथान समचतुर महाठग, तामें जीव लुभानो।
यो ठग जान हर्यो धनि ते सिध, पूजों अरघ चढ़ानो॥

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थाननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(गीता छन्द)

न्यग्रोधपरिमंडल सु जाके, कर्मको रस होय है।
तब ऊपरी तन होय दीरघ, नीचला कृश होय है॥
ह्याँ बैठ आतम महासुख धरि, बन्धकी खबरें नहीं।
तब चेतकर हर कर्म या ठग, पहुँचि है शिवकी मही॥

ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थाननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जब उदै स्वातिक कर्म ठाने, जीव ऐसे तन बँधे।
जो लहे ऊपर नसें दीरघ हेठकी कानी सँधे।
ह्याँ बैठ आतम महासुख धरि, बन्धकी खबरें नहीं।
तब चेतकर हर कर्म या ठग, पहुँचि है शिवकी मही॥

ॐ ह्रीं स्वातिसंस्थाननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जब कर्म कुब्जक देय निजरस, काय तब ऐसा लहे।
उदर पीठ उतुंग जाके, गाँठ बहुती तन रहे॥
ह्याँ बैठ आतम महासुख धरि, बन्धकी खबरें नहीं।
तब चेतकर हर कर्म या ठग, पहुँचि है शिवकी मही॥

ॐ ह्रीं कुब्जकसंस्थाननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

कर्म बावन उदै आतम, काय लघु पावे सही।
तिस माँहि आतम बैठि हरखे, कर्म-वश सब बुधि दही॥
ह्याँ बैठ आतम महासुख धरि, बन्धकी खबरें नहीं।
तब चेतकर हर कर्म या ठग, पहुँचि है शिवकी मही॥

ॐ ह्रीं खर्वाकृतिसंस्थाननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

कर्म हुँडक तने वश जिय, विकट तन रूँड मुँड लहे।
तिन देखि परको अरति उपजे, पापवश कौ ना चहे॥
ह्याँ बैठ आतम महासुख धरि, बन्धकी खबरें नहीं।
तब चेतकर हर कर्म या ठग, पहुँचि है शिवकी मही॥

ॐ ह्रीं हुँडकसंस्थाननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(वेसरी छन्द)

देवतनी गति ताको कहिये, देव आकार धार शुभ रहिये।
ऐसी प्रकृति हरे शिव पाई, ते सिध पूजों अर्घ्य चढ़ाई॥

ॐ ह्रीं देवगतिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

मानुष तन धर जग विचरावे, सो ही गति मानुषकी पावे।
ऐसी प्रकृति हरे शिव पाई, ते सिध पूजों अर्घ्य चढ़ाई॥

ॐ ह्रीं मानुषगतिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

तिर्यक् तन धरि भू विचरावे, सो तिर्यक गति नाम धरावे।
ऐसी प्रकृति हरे शिव पाई, ते सिध पूजों अर्घ्य चढ़ाई॥

ॐ ह्रीं तिर्यग्गतिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

नरक विषें नारकि तन होवे, नर्क गतिको बन्धन जोवे।
ऐसी प्रकृति हरे शिव पाई, ते सिध पूजों अर्घ्य चढ़ाई॥

ॐ ह्रीं नरकगतिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(चौपाई)

पर तन छाँड़ि देवमें आत, मार्ग विषैं सो उदै करात।
सो सुपूरब जानो सही, ता हति लही शुद्ध शिवमही॥

ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्वीनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

पर गति छाँड़ि मनुष तन पाय, अन्तर विषें सु उदै कराय।
सो मनुषापूरवी सही, ता हति लही शुद्ध शिवमही॥

ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्वीनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जो पर गति तज पशु-तन पाय, आवे राह उदै सो थाय।
सो तिरजँचानुपूर्वी सही, ता हति लही शुद्ध शिवमही॥

ॐ ह्रीं तिर्यग्गत्यानुपूर्वीनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

पर तन छाँडि नारकी होय, सो कर्म राह विषे बल जोय।
नरकापूर्वी जानो सही, ता हति लही शुद्ध शिवमही॥

ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वीकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(गीता छंद)

जा कर्म औदारिप्रकृति, पुद्गल प्रमाणो जो लहै।
तनपिंडमें जिय आय निवसे, सो उदारिक तन कहे॥
या कर्म-वश नर-पशू आये, जोर नहिं वश रागके।
इस घाति पाई नारि शिवसी, सिध जजों बड़भागके॥

ॐ ह्रीं औदारिकशरीरनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

वैक्रियिक कर्म-वश यहै पुद्गल, तासमें आतम रहे।
सो जान तन वैक्रियक यातें, देव नारकि जिय लहे॥
कोउ पुण्यतें ले सुभग पुद्गल, पापतें दुखदा सही।
यहु घाति कर्म वैक्रियिक पहुँचे, जजों ते सिधकी मही॥

ॐ ह्रीं वैक्रियिकशरीरनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

प्रकृति आहारक उदय वश, तथा पुद्गल परिणमे।
वह अहारक नाम पावे, श्वेत शुभ अति दमदमें॥
हो रिद्धिधारी महामुनिके, षष्ठ गुणथानक सही।
तिन घाति शिवथल लयो ते धनि, जजों तिनकी सुध मही॥

ॐ ह्रीं आहारकशरीरनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जाति तैजस पुद्गलको पिंड़, कर्म तैजस बल लहे।
सो रहे सब जिय संग लगिके, मोखमें नाहीं रहे॥
जो लहे तैजस मुनि शुभाशुभ, दोय विधि सो रिधि कही।
वो छाँड़ि सकल स्वथान पायो, पहुँचि हैं सिधकी मही॥

ॐ ह्रीं तैजसशरीरनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

ज्ञान दर्शन वेदनी अरु, मोह आयु जु नाम है।
फिर गोत्र अरु अँतराय आठों, कर्म पुद्गल धाम है॥
ये होय इकठे भयो तन जो, कार्माण बखानिये।
हति तासकों शिवथान पायो, तेज सो थुति आनिये॥

ॐ ह्रीं कार्मणशरीरशरीनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(अडिल्ल छन्द)

है बँधान सरूप, पाँच विध गाइये।
गारा ईंट दिवाल, विषे जिमि पाइये॥
त्यों तनमें पल हाड़, नसें बंधन सही।
ते विधि हर सिध भये, जजों तिन सिध मही॥

ॐ ह्रीं पञ्चप्रकारबन्धननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(सोरठा छन्द)

औदारिक तन मांहि, तैसो ही बंधन बने।
सो हर जिन शिव पांहि, ते सिध पूजों अर्घ्यसों॥

ॐ ह्रीं औदारिकबन्धननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

वैक्रियिक वपु मांहि, तैसो बन्धन होत है।
सो हर जिन शिव पांहि, ते सिध पूजों अर्घ्यसों॥
ॐ ह्रीं वैक्रियकबन्धननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

आहारक तन होय, तैसो बन्धन होत है।
सो हर शिव ले धीर, ते सिध पूजों अर्घ्यसों॥
ॐ ह्रीं आहारकबन्धननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

तैजस होय शरीर, तैसो सो बन्धान ले।
सो हर शिव ले धीर, ते सिध पूजों अर्घ्यसों॥
ॐ ह्रीं तैजसबन्धननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

कार्माण तन पाय, तब तैसा बन्धान ले।
सो हर शिवथल जाय, ते सिध पूजों अर्घ्यसों॥
ॐ ह्रीं कार्मणबन्धननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(गीता छन्द)

होय पंच सँघात तन जिमि, भित्ति पर लेपन सही।
तिमि तन विषें चहुं ओर लिपटी, चामतें शुभसी वही॥
तनभवनमें यहु घात गारो, लेप चाम सँघात है।
तिस कर्म हर शिवथान पायो, ते जजो हरषात है॥
ॐ ह्रीं पंञ्चजातिसंघातनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(दोहा)

औदारिक तनके विषे, तथा होय सँघात।
ताको हर ह्वो सिद्धसो, तब शिवथानक पात॥
ॐ ह्रीं औदारिकशरीरसंघातनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

वैक्रीयक तन जो लहे, होय तथा सँघात।
ताकों हर हैं सिद्धसो, तब शिवथानक पात॥
ॐ ह्रीं वैक्रियकशरीरसंघातनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

आहारक तन संगमें, होय तथा संघात।
ताकों हर हैं सिद्ध सो, तब शिवथानक पात॥

ॐ ह्रीं आहारकशरीरसंघातनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

तैजस जाके हो वपू, लखो वही संघात।
ताकों हर हैं सिद्ध सो, तब शिवथानक पात॥

ॐ ह्रीं तैजसशरीरसंघातनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

कार्माण तन संघ जे, हो तैसो सँघात।
ताकों हर हैं सिद्ध सो, तब शिवथानक पात॥

ॐ ह्रीं कार्माणशरीरसंघातनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(चाल--वीर जिनेन्द्रकी)

जाति इकेन्द्रीको लहे जी, ते तो ही होय ज्ञान।
ता द्वारे सुख दुख लहे जी, सो हर ले शिवथान
जी भाई, धर्म बिना सुख नाँहि॥

ॐ ह्रीं एकेन्द्रियजातिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(अडिल्ल छन्द)

क्षय-उपशम दो-इन्द्रियको तन पाय है।
कर्म दुइन्द्रिय नाम उदय तब थाय है॥
ताही धारे सुख दुख ते तो पाय जी।
याहि कर्म जो हरे सिद्ध सो थाय जी॥

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजातिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

तेइन्द्रियको क्षय-उपशमसो जिय लहे।
जातें त्रीन्द्रिय नामकर्म तहँ रस कहे॥
ताही धार दुःख सुख आतम पाय जी।
याहि कर्म जो हरे सिद्ध सो थाय जी॥

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजातिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

चौ-इन्द्रियके उदय जीव चौ-अख बने।
ज्ञान तितो ही होय अधिक बुधिको हने।।
या वश जीव अखंख्याते भवमें रहे।
याको हर सुध भये ताहि धुनि सिध कहे।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजातिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

पञ्चेन्द्रिय वश जीव नरक नर सुर बने।
जाति पशू भी होय कर्म-वश बुधि हने।।
यथा कर्म रस देय ज्ञान तैसो लहे।
याको हर सुध होय ताहि धुनि सिध कहे।।

ॐ ह्रीं पञ्चेन्द्रियजातिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

अङ्ग आठ नितम्ब मस्तक, हाथ दुग पद उर सही।
फिर पीठ मिल वसु जान तनमें, बहु उपाङ्ग श्रुति यों कही।।
सो होय तीन शरीर माँही, दोयके ना कहे।
इन घातिके शिवथान पहुँचे, लोकत्रय मंगल ठहे।।

ॐ ह्रीं अङ्गोपाङ्गनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जो बने औदारिक तनमें, अंग उपँग सुहावने।
सो जान औदारिक अङ्गो-पाङ्गकर्मतें पावने।।
इस तने वश सुख मान निवस्यो, रोगकी सुधबुध नहीं।
तिस घातिके शिवथान पहुँचे, ते जजों मन वच ठही।।

ॐ ह्रीं औदारिकशरीरङ्गोपाङ्गनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

वैक्रियिक-आङ्गोपाङ्ग कर्मके, उदै सेती सो लहे।
नर्कतन नहिं इष्ट पावे, देवके शुभसों रहे।।
ये हरष और विषाद वश जिय, काल चिर इन वश रहे।
जे घाति तिनको गये शिवपुर, ते जजों तहँ थिर ठहे।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिकशरीरङ्गोपाङ्गनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

ऋद्धिबल यति लहे अहारक, तन महा हितदाय जी।
तहँ होय अङ्गोपाङ्ग सुखदा, कर्मवश सो पायजी॥
सो अहार आङ्गोपाङ्ग सुन्दर, पाय करि श्रेणी लहे।
इस टारि धारि सुरूप अपनो, शुद्ध कर सिध-थल लहे॥

ॐ ह्रीं आहारकशरीराङ्गोपाङ्गनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(चौपाई छन्द)

जो निज चाल सुभग उरवेय, ताको भली चाल रस देय।
यह भी भव में राखनहार, या हति सिद्ध भये भवपार॥

ॐ ह्रीं शुभगमननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

अशुभ चाल जो अपनी कहे, करम अशुभ चाल रस लहे।
यह भी भव में राखनहार, या हत सिद्ध भये भवपार॥

ॐ ह्रीं अशुभगमननामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

पैंसठ पिण्ड प्रकृति ये जान, चौथे अङ्ग कहे भगवान।
इनकों हत शिवथानक पात, तिन सिध पाँय जजों हरषात॥

ॐ ह्रीं पंचषष्ठिपिण्डप्रकृतिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

उदै अगुरुलघु कर्म सुजान, रहे जथारथ जिय तन ठान।
ताकों हत पहुँचे शिव जाय, ते सिध जजों अर्घ्यतें भाय॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुनामकर्मरहितायसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

स्वासोच्छ्वास जीव जो लहे, ताकों स्वास कर्म रस कहे।
सो हर करि शिवथानक गये, ते सिध मन वच तन हम नये॥

ॐ ह्रीं स्वासोच्छ्वासनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

उदय कर्म उपघात सु होय, ता तन ऐसे लक्षण होय।
जातें अपने तनका घात, याहि कर्म घातें शिव पात॥

ॐ ह्रीं उपघातनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

परतन घातक अङ्ग जु होय, सो परघात कर्म बल जोय।
याकों हत पाई शिवनारि, ते सिध जजों अरघ मद-हारि॥

ॐ ह्रीं परघातनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

आतप कर्म उदै जब जोय, निजतनज्योति गर्म अति होय।
सूर्य-विमान उदै यह जान, याको हनि पायो शिवथान॥

ॐ ह्रीं आतपनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

निज तन शीत शीतदुति होय, तो उद्योत कर्म रस जोय।
शशि-विमान आदिक बहु थान, याको हरे होय शिव जान॥

ॐ ह्रीं उद्योतनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(गीता छंद)

निर्माण परकति दोय विधि है, थान अरु परमान जी।
होय अङ्गोपाङ्ग निज थल, निर्माण सोई थानजी॥
फिर अंग-उपांग प्रमानतें है, सो प्रमान सु जानिये।
तजि दोय विध निर्मान कर्महिं, लहे शिवथल ठानिये॥

ॐ ह्रीं निर्माणनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जहँ होय तीस रु चार अतिशय, समवसरण सुहावनो।
फिर पञ्चकल्याणादि मंगल, जगतको सुखदा बनो॥
होय तीर्थंकर नाम प्रकृति, जहाँ यह विधि थाय जी।
तजि तास को शिवथान पायो, ते जजों थुति लाय जी॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(चौपाई छन्द)

जिय सम्पूरण पावें काय, कर्म उदै परजापत थाय।
याकों हति पायो शिवथान, ते सिध जजों अर्घ्य शुभ ठान॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

तन पर्याप्ति पूर्ति ना लहे, विन पर्याप्ति काय सु जहे।
याकों हति पायो शिवथान, ते सिध जजों अरघकरि आन॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

इक तन स्वामी इक जिय होय, प्रकृति प्रत्येक सुबलतें सोय।
ताकों हर पहुँचे शिवथान, तिनको अरघ जजों हित ठान॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

इक तनके स्वामी बहु जीव, ते साधारण उदय सदीव।
ताकों हर पहुँचे शिवथान, ते सिध जजों अरघ शुभ ठान॥

ॐ ह्रीं साधारणनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

दोइन्द्रिय आदिक हो जीव, कर्म उदय त्रस ताके कीव।
ताकों हर पहुँचे शिवधाम, ते सिध पूजों शिवपद-काम॥

ॐ ह्रीं त्रसनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

एकेन्द्रियमें जन्म लहांहि, सो जिय थावर उदै सु पांहि।
ताकों हर पायो ध्रुव थान, ते सिध जजों छाँडि उर मान॥

ॐ ह्रीं स्थावरनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

परको रोक स्वयं रुक जाय, बादर कर्म उदै तँह थाय।
ताकों हर पायो शिवथान, ते सिध जजों हरष उर आन॥

ॐ ह्रीं बादरनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

वज्र थकी भी रुके न जीव, ताके सूक्षम कर्म सदीव।
ताकों नाशि गये शिवथान, ते सिध पूजों अरघ सु ठान॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जो निज शब्द भलो उर वेय, सुस्वर कर्म उदै तब देय।
ताकों नाशि गये सुध धीर, ते सिध जजों भक्ति करि वीर॥

ॐ ह्रीं सुस्वरनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जब निज शब्द भलो नहिं कहे, तब ही दुस्वर-कर्म-रस लहे।
ताकों नाशि भये सुध जीव, ते सिध जजों सु हरष सदीव॥

ॐ ह्रीं दुःस्वरनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

तनमें शुभ लच्छन सुन्दरो, ताको उदै कर्म शुभ खरो।
ताकों नाशि गये सुधधाम, ते सिध जजों हरषके काम॥

ॐ ह्रीं शुभनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

अशुभ चहत तनरूप न कोय, ताके अशुभ कर्म-रस होय।
ताकों हनि पायो निर्वान, ते सिध पूजों जै जै ठान॥

ॐ ह्रीं अशुभनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

सप्तधातु तनके थिर रहें, ताके कर्म प्रबल थिर कहें।
कर्मनाशि लीयो सुधधाम, ते सिध जजों हरषके काम॥

ॐ ह्रीं स्थिरनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

सप्तधातु तनकी थिर नांहि, तब ही अथिर कर्म-रस-ठाहिं।
यहू कर्म हर गये शिव सोय, ते सिध पूजों मन वच जोय॥

ॐ ह्रीं अस्थिरनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जब आदेय कर्म रस देय, देह प्रभामय तब ही होय।
ताकों नाशि गये निर्वान, ते सिध पूजों अर्घ्य महान॥

ॐ ह्रीं आदेयनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

अनादेय प्रकृति रस आय, तब जिय देहप्रभा न लहाय।
ताकों हति पायो निर्वान, ते सिध पूजों मन वच जान॥

ॐ ह्रीं अनादेयनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(अडिल्ल छंद)

सुभग प्रकृति जब उदै, जीवके आय है।
तापर परका नेह न तब, दिखलाय है॥

याकों नाशि गये शिवथानकमें सही।
सो सिध पूजों भावसहित वसु द्रव लही॥

ॐ ह्रीं सुभगनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(गीता छन्द)

अपने प्रति अनुराग परका, जासतें होवे नहीं।
प्रकृति दुर्भग उदै ताके, तासतें यों ही सही॥
हो कर्म जाके उदै जैसो, भाव भी तैसो बने।
यह नाशिके शिवथान पायो, ते जजों सुखदा बने॥

ॐ ह्रीं दुर्भगनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जिस कर्मसे जस जगत माने, और जग शोभा कहे।
सो कर्म जस जाके उदै है, तासतें महिमा लहे॥
यों जान खुश हो रहे तनमें, बंध बेद न पाय है।
यह नाशिके शिवथान पायो, ते जजों सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं यशःनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जस नांहि जिससे जगत माने, हो लोकमें अजसी सही।
तिस जीवके है अजसको बल, तासतें शोभा नहीं॥
ये कर्म-परकति पाप हैं, सो तासतें या विध बनी।
ते सिद्ध पूजों भाव शुभकर, जासने प्रकृति हनी॥

ॐ ह्रीं अयशःनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

नामकर्म के सुभट बहुविध, स्वांग अति धारें सही।
गिन तिरावन तिन्हें आगे, जीव इन वश चिर गही॥
यह नामकर्म निवार पहुँचे, लोकशिखर-शिरोमनी।
ते सिद्ध पूजों अर्घ्य करिके, देहु शिव मो शिवधनी॥

ॐ ह्रीं त्र्यधिकनवतिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

गोत्रकर्ममुक्त सिद्ध-पूजा

(चाल : जोगीरासा)

गोत्र करम है सूरजवंशी, भूपतिसा रिझवारो।
ऊँच नीच ताके घर दौलत, सेवक सो अधिकारो।
रीझे ऊँच करे बिन रीझे, नीच दशा कर डारे।
ऐसो कर्म घात शिव पहुँचे, ते सिध शरन हमारे।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

नीच गोत्रके उदै जीव यो, नारक पशु बन आवे।
मनुष विषें कुल वैश्य विप्र वा, क्षत्री कुल नहीं पावे।।
या कर्मके वश जीव परे सब, ते ही नीच कहाये।
याकों हत शिवथान गये धनि, पूजों मन वच काये।।

ॐ ह्रीं नीचगोत्रकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

उच्चगोत्रके ही बलसेती, सुर नर जीव कहावे।
नरक पशूगति नाहि पावे, सुन्दर नर उपजावे।।
वर्ण उच्च लहि मानुष स्याना, भव-भवमें भरमाई।
ऐसो कर्म नाश शिव पायो, तिन युत पूजों भाई।।

ॐ ह्रीं उच्चगोत्रकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(पद्धरि छंद)

ये गोत्र दोय विध उच्च नीच, इनसे जिय सुख दुख लहे खींच।
यों कर्मनाश शिव सौख्य पाय, तिनको नितप्रति पूजों सुभाय।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

अन्तरायकर्ममुक्त सिद्ध-पूजा

(गीता छन्द)

पंचविध अँतराय ताने, जीव वीरज हर लियो।
तब वीर्य बिन जिय निबल ह्वैके, चारगति निजघर कियो॥
हे महाभट अँतराय शिव-मग, घातिके छलकों चहे।
ताकों सु हर शिवथान पायो, जजे ताकों शिव लहे॥

ॐ ह्रीं पंचप्रकारान्तरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जब है अँतराय दान सु, दान जिय सो ना करे।
परभाव मोहित रहे निशदिन, त्याग बुधि सो ना धरे॥
इस कर्म के वश जीव है करि, रहे सकति गमाय जी।
ताकों सु हति शिव लयो जाकों, नमूं मन वच काय जी॥

ॐ ह्रीं दानान्तरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

लाभके अँतरायके वश, जीव लाभ सु ना लहे।
जो करे कष्ट उपाय सगरे, कर्मवश विरथा रहे॥
नहिं जोर याको चले इक छिन, दीनसो जगमें फिरे।
ते जजों सिद्ध जु अर्घ्य धरिके, कर्मको जिनने हरे॥

ॐ ह्रीं लाभान्तरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

भोगके अँतरायके वश, भोग वस्तु जु ना मिले।
जो मिले तो नाहिं भोग सक है, कर्म-वश नित ही बले॥
ते धन्य कर्म निवार ऐसे, भोग निज परनति कियो।
ते सिद्ध पूजों अर्घ्य सेती, त्यागिके निज भौ लियो॥

ॐ ह्रीं भोगान्तरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

रत्नभूषण नारि वस्तु सु, सुभग मन्दिर सोहना।
इत्यादि जो उपभोगके, द्रव मिलें शुभ मन मोहना॥

सो सके नाहीं भोग करि किय, उदय कर्म उपभोग है।
जो गये याकों छाँडि शिवपुर, जजों तहाँ नहिं रोग है॥

ॐ ह्रीं उपभोगान्तरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

वीर्य कर्म अन्तराय जाके, उदय बल जिय ना लहे।
पुरुषार्थ जामें होय कुछ नहिं, दीनशक्ति सु जुत रहे॥
नहिं जोर यापे चले का को, महाबलधर कर्म है।
हर तासकों शिवथान पायो, जजों ते सुध धर्म है॥

ॐ ह्रीं वीर्यान्तरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

(दोहा)

पाँचों ही अन्तरायसे, आतम वीरज ढाय।
इनको हर शिवथल गये, सो सिध पूजों भाय॥

ॐ ह्रीं पञ्चप्रकारान्तरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

कर्मसुभट यह जग जयो, ते धनि ये लख लाय।
या विधि बंध उदय सता नाश सिद्ध थल पाय॥

(वेसरी–छन्द)

सब परकति इकसै अड़तालो, बंधतनी शत बीस सँभालो।
शत बाईस उदयकी भाई, या विधि क्षय करिके शिवपाई॥

जीव अनादि मिथ्यापुर माहीं, बंध-उदय-सत्ता-वश थाहीं।
जब कोइ काल-लब्धि ढिग आवे, तब यों कर्मनाश शिवजावे॥

जब जिय दूजे थानक होवे, तहँ सतको प्रकृति नहिं खोवे।
बंधविषें षोड़स भट तोरे, उदै तने भट पंच मरोरे॥

तब जिय नशि तीजेपुर आवे, तो भी बहुभट साथ धकावे।
सत्ताके सब ही भट लारे, बंध तने पच्चीस निवारे॥

उदय तने नव सूरा खोवे, फिरि जिय सम्यग्दृष्टि होवे।
बहुतक सूर तहाँ सँह आवें, सत्ता सुभट सबै ही पावें॥

बंध तने नहिं सुभट खपावे, उदय तनों इक जोधा ढावे।
फेरि नाश पंचम-पुर आयो, सत्तासों इक सूर खपायो॥

बंधविषें दस परकति तोरी, सत्रह उदय मध्यतें मोरी।
फेरि जीव मुनिपदकों पायों, सत्तासों इक सूर खिपायो॥

चार शूर बँधके क्षय कीने, वसु जोधा सु उदयके छीने।
तो भी सुभट संग बहु आये, तब चेतन सप्तम पुर धाये॥

सत्ता सुभट गैल हैं सारे, बंध तने जोधा षट् मारे।
उदय तने पँच शूरा जीते, तो भी कर्म नसै नहिं बीते॥

सो जय अष्टमपुरको आयो, सत्ताके वसु भट जय धायो।
बंधविषें को इक भट डार्यो, उदय चार भटको मद मार्यो॥

क्षायकश्रेणी सो भट जावे, उदय तने यहँ षट भट ढावे।
सो उपशम ग्यारहमें खोवे, जो दुय भट इस रह जहाँ धोवे॥

फिर नवमें पुर आयो भाई, सत्ता शूर सबै सँग धाई।
शूर छत्तीस बंधके खोये, उदै तने षट् जोधा धोये॥

फिर दशवें पुर आयो शूरा, पीछे करम लगे दुख पूरा।
सत्ता शूर छत्तीस न आये, उदय तने षट् शूर नसाये॥

पंच बंधके जोधा मारे, यों करि दशवें पुरहिं पधारे।
ह्यां सत्ताको इक भट तोर्यो, षोडश भट बँधको मद मोर्यो॥

उदै तनो इक जोधा खोयो, तब आतम द्वादश-पुर जोयो।
उलँघि ग्यारमें गढ़ यहँ आयो, मोहतनो सब कुल कहलायो॥

फिर यँहतैं जिनपदमें धाये, षोडश भट सत्ताके ढाये।
उदै विषें षोडश ही मारे, बंध सुभट पै नाहिं निहारे॥

तब अयोग द्वीपमें आये, सत्ताके सब भट सँग धाये।
उदै तने भट तीस मरोरे, बंध एक भट सो यहँ तोरे॥

तुछ थितिकर शिव सहज विराजे, तीन लोक नायक फिर बाजे।
सत्ता सुभट पचासी खोये, उदय तने द्वादश भट बोये॥

ऐसे आतम शिव जो जावे, या विध कर्मबंध को ढावे।
ले सुख काल अनंता राजे, ते नित पूजे भवि शिव काजे॥

सिधथल सिद्ध अनंते जानो, इकमें सिद्ध अनंते मानो।
सब ही समसुख हैं समज्ञानो, बिन मूरति चेतन भगवानो॥

जो सिधसुख सो जगमें नाहिं, जग-दुख जे नहिं सिद्धन ठाहीं।
उनके सुखको को कवि गावे, जाने सो सब कर्म खिपावे॥

इनको सेये पद इन पावे, अधिक कहा फल मुखतें गावे।
यो फल सुनि हम मन ललचायो, तातें 'टेक' छाँडि शिरनायो॥

(दोहा)

धोय करम-रज शिव वरो, महा सुभटता लाय।
ते सिध सबको सरन हैं, और कहा थुति गाय॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यम्।

(दोहा)

नमो सिद्ध सिध कारने, भक्ति महा मन लाय।
पूजे सो शिव-सुख लहे, और कहा अधिकाय॥

॥ इत्याशीर्वाद॥

इति सिद्धपरमेष्ठि-पूजाविधान समाप्त

सिद्धपरमेष्ठि पूजा

(शार्दुलविक्रीडित)

ऊर्ध्वाघोर-युतं सबिंदु-सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं।
वर्गापूरितदिग्गतांबुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितं।
अंतः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितं।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव सन्निधिकरणं।

(वसंततिलका)

सिद्धो निवासमनुगं परमात्मगम्यं।
हान्यादिभावरहितं भववीतकायं।
रेवापगावरसरोयमुनोभ्दवानां।
नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्धचक्रं॥१॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।

आनंदकंदजनकं घनकर्ममुक्तं।
सम्यक्त्वशर्मगरिमं जननार्तिवीतं।
सौरभ्यवासितभुवं हरिचंदनानां।
गंधैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम्॥२॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चंदनं।

सर्वावगाहनगुणं सुसमाधिनिष्ठं।
सिद्धं स्वरूपनिपुणं कमलं विशालं॥
सौगंध्यशालिवनशालिवराक्षतानां।
पुंजैर्यजे शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रम्॥३॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्।

नित्यं स्वदेहपरिमाणमनादिसंज्ञं।
द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम्॥
मंदिरकुंदकमलादि वनस्पतीनां।
पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वरसिद्धचक्रम्॥४॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं।

ऊर्ध्वस्वभावगमनं सुमनोव्यपेतं।
ब्रह्मादिबीजसहितं गगनावभासम्॥
क्षीरान्नसाज्यवटकैः रसपूर्णगर्भै।
र्नित्यं यजे चरुवरैर्वरसिद्धचक्रम्॥५॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधरोगविनाशनाय नैवेद्यं।

आतंकशोकभयरोगमदप्रशांतं।
निर्द्वंद्वभावधरणं महिमानिवेशं॥
कर्पूरवर्तिबहुभिः कनकावदातैः।
दीपैर्यजे रुचिवरैर्वरसिद्धचक्रम्॥६॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं।

पश्यन्समस्तभुवनं युगपन्नितांतं।
त्रैकाल्यवस्तुविषये निविडप्रदीपम्॥
सद्द्रव्यगंधघनसारविमिश्रितानां।
धूपैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम्॥७॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं।

सिद्धासुरादिपतियज्ञनरेंद्रचक्रैः।
ध्येयं शिवं सकलभव्यजनैः सुवंद्यं॥
नारिंगपूगकदलीफलनारिकेलैः।
सोऽहं यजे वरफलैर्वरसिद्धचक्रम्॥८॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलम्।

(शार्दूलविक्रीडित)

गंधाढ्यं सुपयोमधुव्रतगणैः संगं वरं चंदनं।
पुष्पौघं विमलं सदक्षतचयं रम्यं चरुं दीपकं।
धूपं गंधयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये।
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितं।।९।।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसंततिलका)

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं।
सूक्ष्मस्वभावपरमं यदनंतवीर्यं।।
कर्मौघकक्षदहनं सुखसस्य बीजं।
बंदे सदा निरुपम वरसिद्धचक्रम्।।१०।।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(शार्दूलविक्रीडित)

त्रैलोक्येश्वरवन्दनीयचरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वतीं।
यानाराध्य निरुद्धचण्डमनसः संतोऽपि तीर्थंकराः।।
सत्सम्यक्त्वविबोधवीर्यविशदाऽव्याबाधताद्यैर्गुणैः।
युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान्।।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्धं निर्वपामीति स्वाहा।

(मालिनी)

असमसमयसारं चारुचैतन्यचिह्नं।
परपरिणतिमुक्तं पद्मनंदीद्रवंद्यं।
निखिलगुणनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं।
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिं।।

इत्याशीर्वादः। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री सिद्धपरमेष्ठि-पूजा

(शार्दुलविक्रीडित)

ऊर्ध्वाघोरयुतं सबिंदु-सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं।
वर्गापूरितदिग्गतांबुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितं।
अंतः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितं।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(द्रूतविलम्बित)

निजमनोमणिभाजनभारया, समरसैकसुधारसधारया।
सकलबोधकलारमणीयकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने पूजनार्थं जलं....।

सहजकर्मकलङ्कविनाशनैरमलभावसुवासितचन्दनैः ।
अनुपमानगुणावलिनायकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने पूजनार्थं चंदनं....।

सहजभावसुनिर्मलतंदुलैः सकलदोषविशालविशोधनैः।
अनुपरोधसुबोधनिधानकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने पूजनार्थं अक्षतान्....।

समयसारसुपुष्पसुमालया सहजकर्मकरेण विशोधया।
परमयोगबलेन वशीकृतं, सहजसिद्धमहं परिपूजये॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने पूजनार्थं पुष्पं....।

अकृतबोधसुदिव्यनिवेद्यकैर्विहितजातजरामरणांतकैः ।
निरवधिप्रचरात्मगुणालयं, सहजसिद्धमहं परिपूजये॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने पूजनार्थं नैवेद्यं....।

सहजरत्नरुचिप्रतिदीपकैः, रुचिविभूतितमः प्रविनाशनैः।
निरवधिस्वविकाशप्रकाशनैः, सहजसिद्धमहं परिपूजये॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने पूजनार्थं दीपं....।

निजगुणाक्षयरूपसुधूपनैः स्वगुणघातिफलप्रविनाशनैः।
विशदबोधसुदीर्घसुखात्मकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने पूजनार्थं धूपं....।

परमभावफलावलिसंपदा, सहजभावकुभावविशोधया।
निजगुणस्फुरणात्मनिरंजनं सहजसिद्धमहं परिपूजये॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने पूजनार्थं फलं....।

(शार्दूलविक्रीडित)

नेत्रोन्मीलिविकाशभावनिवहैरत्यन्तबोधाय वै।
वार्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीप-धूपैः फलैः॥
यश्चिन्तामणिशुद्धभावपरमज्ञानात्मकैरर्चयेत् ।
सिद्धं स्वादुमगाधबोधमचलं संचर्चयामो वयम्॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने पूजनार्थं महार्घ्यं....।

(मालिनी)

असमसमयसारं चारुचैतन्यचिह्नं।
परपरिणतिमुक्तं पद्मनंदींद्रवंद्यं।
निखिलगुणनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं।
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिं॥

इत्याशीर्वादः। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

❁

श्री सिद्धपरमेष्ठि-पूजा

(रोला छंद)

आठों कर्म विनाश पाय गुण आठ अनंता।
भए चिदानंद मग्न निरंजन नित्य सु संता।
कृतकृत्य जु तनु वात शीश जगदीश विराजै।
ज्ञायक लोकालोक आय तिष्ठौ दुख भाजै॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिन ! अत्रावरत अवतरत संवौषट् इति आह्वानम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः इति स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(रेखता)

हिमानीका लिया पानी, समानी चंद सीतानी।
दिया धारा जु हित सानी, निशानी सौख्य अमलानी।
जजों श्री सिद्ध जिन प्यारे, अतुल निधि ज्ञान अविकारे।
करो भव पार भवपारे सु भावा भाव कथहारे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति०

हरी चंदन केलि नंदन, घसौं आताप हरि फंदन।
चढाऊँ पद्म जगवंदन, लहौं निर्वाण निर्फंदन॥
जजों श्री सिद्ध जिन प्यारे, अतुल निधि ज्ञान अविकारे।
करो भव पार भवपारे सु भावा भाव कथहारे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धरे अक्षत चरण आगे, निशापति-किरण लज भागे।
किधौं जो पुन्न तुम त्यागे, परो यह रस अति जागे॥
जजों श्री सिद्ध जिन प्यारे, अतुल निधि ज्ञान अविकारे।
करो भव पार भवपारे सु भावा भाव कथहारे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन अति सुमनसे ल्याऊँ, सुमनके सुमनसे ध्याऊँ।
सु मनमथको हरो पाऊँ, निजानंदात्म गुण गाऊँ॥
जजों श्री सिद्ध जिन प्यारे, अतुल निधि ज्ञान अविकारे।
करो भव पार भवपारे सु भावा भाव कथहारे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने कामबाण-विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति ०

ये अक्षक पक्षको लक्षक, सुभक्षक स्वक्ष क्षुधनक्षक।
धरो नैवेद्य है दक्षक, निकक्षक कर्म चितरक्षक॥
जजों श्री सिद्ध जिन प्यारे, अतुल निधि ज्ञान अविकारे।
करो भव पार भवपारे सु भावा भाव कथहारे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति०

चढाऊँ दीप तम नाशै, उडे कज्जल रु परकाशै।
जो आये नाथके पासै, उरध ततकाल ही जासै॥
जजों श्री सिद्ध जिन प्यारे, अतुल निधि ज्ञान अविकारे।
करो भव पार भवपारे सु भावा भाव कथहारे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति०

तगर कृष्णागरु लेऊँ, वरंगी वह्निमें खेऊ।
उडै जो धूम इम बेऊँ, भगे अघ चरण तुव सेऊ॥
जजों श्री सिद्ध जिन प्यारे, अतुल निधि ज्ञान अविकारे।
करो भव पार भवपारे सु भावा भाव कथहारे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति०

फल सु दाड़िम नारंगी, अभंगी पुंगी बहुरंगी।
धरे ढिग चरण मनरंगी, लहै पद अचल निरसंगी॥
जजों श्री सिद्ध जिन प्यारे, अतुल निधि ज्ञान अविकारे।
करो भव पार भवपारे सु भावा भाव कथहारे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादिक द्रव्य सब लीने, अर्घ्यजुत आरती लीने।
हरौ आरत कृपाभीने, कटै जंजाल दुख दीने॥
जजों श्री सिद्ध जिन प्यारे, अतुल निधि ज्ञान अविकारे।
करो भव पार भवपारे सु भावा भाव कथहारे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

समवसरणमें विश्वपति, कियौ विश्व व्याख्यान।
मिट्यो जगत मिथ्यात्व सब, फुनि पहुंचे निरवान॥१॥

(पद्धरी छन्द)

जय घाती प्रकृति त्रेसठ सजोगी, दो समय पिच्यासी क्षय अयोगि।
परमौदारिकतैं गये मुक्त, जिमि मूस मांहि आकाश शुक्त॥२॥

इक समय मांहि ऊरध स्वभाव, जिमि अग्नि शिखा तनु अंत चाव।
जल मछ इव सहकारीन धर्म, आगे केवल आकाश पर्म॥३॥

साकार निराकारो व भास, सहजानंद मग्न सु चिद्विलास।
गुण आठ आदि राजै अनंत, गणधरसे कहत न लहत अंत॥४॥

चेतन परदेशी अस्त व्यस्त, परमेय अगुरुलघु दर्वसस्त।
अरू अमूरतीक सु आठ येव, ये वस्तु स्वभाव सदैव तेव॥५॥

अब गुण पर्ययके भेद दोय, एक व्यंजन दूसरो अर्थ होय।
सो प्रथम अयोगा देहकार, परदेश चिदानंदको निहार॥६॥

अब अर्थ अगुरुलघु गुण सु द्वार, षट् गुणी हानि वृध निज सुसार।
सो समय समय प्रति यही भांत, जिमि जलकिलोल जलमें समात॥७॥

इह भांत सु तव गुण पर्ज्ज दर्व, हो ध्रौव्योत्पाद-व्ययात्म सर्व।
यह लोक भरो षट दर्वसे जु, तिनकी गुण पर्जय समयके जु॥८॥

सो होत अनंतानंत जान, स्वभाव विभाव सु भेद मान।
जे ते त्रैकाल त्रिलोकके जु, इक समय मांहि जुगपत लखे जु॥९॥

हस्तामल इव दर्पण सु भाव, अक्षय सु उदासीनता सुभाव।
तब इन्द्र ज्ञानतैं मुक्ति जान, आयो पंचम कल्याण थान॥१०॥
चारों विध देव सु सपरिवार, निज वाहन जुवति उछाह धार।
तब अग्निकुमारके इन्द्र ठाढ़, निज मुकुर मांहि तैं अनल काढ॥११॥
कीनों जिन तन संस्कार सार, सौधर्म इन्द्र अति हर्ष धार।
फुनि पूज भस्म मस्तक चढाय, सब देव हु निज निज शीस नाय॥१२॥
करि चिह्न थान निज गए थान, फुनि पूजे मुनि जग खग सु आन।
तुम भए सु आदि अनंत देव, अनुपम अबाध अज अमर सेव॥१३॥
मैं पर्यो चतुर्गति-वन सु मांहि, दुःख सहे सो तुम ते छिपे नांहि।
तुम करुणानिधि निज बान धार, संसार खारतैं तार तार॥१४॥

(धत्तानंद छन्द)

जय जय जगसारं, विगत विकारं, करुणागारं शिवकारं।
मम करु निरवारं, हे प्रणधारं चिद्व्यापारं दातारं॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्धपरमेष्ठि-पूजा

(अडिल्ल छंद)

अष्ट करम करि नष्ट अष्ट गुण पायकैं।
अष्टम वसुधा मांहि विराजे जायकैं।
ऐसे सिद्ध अनंत महंत मनायकैं।
संवौषट् आह्वान करूं हरषायकैं॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्, आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(त्रिभंगी छंद)

हिमवनगत गंगा, आदि अभंगा, तीर्थ उतुंगा सरवंगा।
आनिय सुरसंगा, सलिल सुरंगा, करि मन चंगा भरि भृंगा॥
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवनकामी, अंतरजामी, अभिरामी।
शिवपुरविश्रामी, निज निधि पामी, सिद्ध जजामि शिरनामी॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविर्निमुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिचंदन लायो, कपूर मिलायो, बहु महकायो, मन भायो।
जल संग घसायो, रंग सुहायो, चरन चढायो हरषायो॥
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवनकामी, अंतरजामी, अभिरामी।
शिवपुरविश्रामी, निज निधि पामी, सिद्ध जजामि शिरनामी॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविर्निमुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल उजियारे शशि-दुति टारे, कोमल प्यारे अनियारे।
तुषखंड निकारे जलसु पखारे, पुंज तुम्हारे ढिंग धारे।
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवनकामी, अंतरजामी, अभिरामी।
शिवपुरविश्रामी, निज निधि पामी, सिद्ध जजामि शिरनामी॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविर्निमुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्ते अक्षतान् निर्वपामीति०

सुरतरुकी बारी प्रीति विहारी, किरिया प्यारी गुलझारी।
भरि कंचन थारी माल संवारी, तुम पदधारी अतिसारी॥
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवनकामी, अंतरजामी, अभिरामी।
शिवपुरविश्रामी, निज निधि पामी, सिद्ध जजामि शिरनामी॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविर्निमुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्व०

पकवान निवाजे स्वाद विराजे, अमृत लाजे क्षुत भाजे।
बहु मोदक छाजे घेवर खाजे, पूजन काजे करि ताजे॥

त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवनकामी, अंतरजामी, अभिरामी।
शिवपुरविश्रामी, निज निधि पामी, सिद्ध जजामि शिरनामी॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविर्निमुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आपा-पर भासै ज्ञान प्रकासे, चित्त विकासै तम नासै।
ऐसे विध खासे दीप उजासे, धरि तुम पासै उल्लासे॥
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवनकामी, अंतरजामी, अभिरामी।
शिवपुरविश्रामी, निज निधि पामी, सिद्ध जजामि शिरनामी॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविर्निमुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चुंबत अलिमाला गंध विशाला, चंदन कालागरु वाला।
तसु चूर्ण रसाला करि ततकाला, अघनी ज्वालामें डाला॥
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवनकामी, अंतरजामी, अभिरामी।
शिवपुरविश्रामी, निज निधि पामी, सिद्ध जजामि शिरनामी॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविर्निमुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०

श्रीफल अतिभारा पिस्ता प्यारा, दाख छुहारा सहकारा।
रितुरितुका न्यारा सत्फल सारा, अपरंपारा ले धारा॥
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवनकामी, अंतरजामी, अभिरामी।
शिवपुरविश्रामी, निज निधि पामी, सिद्ध जजामि शिरनामी॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविर्निमुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्रातये फलं निर्व०

जल फल वसु वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदाके कंदा।
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम बन्दा॥
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवनकामी, अंतरजामी, अभिरामी।
शिवपुरविश्रामी, निज निधि पामी, सिद्ध जजामि शिरनामी॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिमुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

ध्यानदहन विधिदारु दहि, पायो पद निरवान।
पंचभावजुत थिर भये, नमौं सिद्ध भगवान॥१॥

(त्रोटक छंद)

सुख सम्यग्दर्शन-ज्ञान लहा, अगुरुलघु सूक्ष्म वीर्य महा।
अवगाह अबाध अघायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥२॥

असुरेन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्र जजैं, भूचरेन्द्र खगेन्द्र गणेन्द्र भजैं।
जय जामन मर्ण मिटायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥३॥

अमलं अचलं अकलं अकुलं, अछलं असलं अरलं अतुलं।
अरलं अरहं शिवनायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥४॥

अजरं अमरं अधरं सुधरं, अडरं अहरं अमरं अघरं।
अपरं असरं सब लायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥५॥

वृषवृंद अमंद न निंद लहो, निरद्वन्द अफंद सुछंद रहो।
नित आनंदवृंद विधायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥६॥

भगवंत सुसंत अनंतगुणी, जयवंत महंत नमंत मुणी।
जग जंतुतणो अघघायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥७॥

अकलंक अटंक शुभंकर हो, निरडंक निःशंक शिवंकर हो।
अभयंकर शंकर क्षायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥८॥

अतरंग अरंग असंग सदा, भवभंग अनंत उत्तुंग सदा।
सरवंग अनंग नसायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥९॥

ब्रह्मांड जु मंडलमंडन हो, तिहुं दंड प्रचंड विहंडन हो।
चिदपिंड अखंड अकायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥१०॥

निरभोग सुभोग वियोग हरे, निरजोग अरोग अशोग धरे।
भ्रमभंजन तीक्षण सायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥११॥

जय लक्ष्य अलक्ष्य सुलक्षक हो, जय दक्षक पक्षक रक्षक हो।
पण अक्ष प्रतक्ष खपायक हो, सब सिद्ध नमा सुखदायक हो॥१२॥

अप्रमाद अनाद सुस्वादरता, उनमाद विवाद विषादहता।
समता रमता अकषायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥१३॥

निरभेद अखेद अछेद सही, निरवेद निवेदन वेद नहीं।
सब लोक अलोकके ज्ञायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥१४॥

अमलीन अदीन अरीन हने, निजलीन अधीन अछीन बने।
जमको घनघात बचायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥१५॥

न अहार निहार विहार कबै, अविकार अपार उदार सबै।
जगजीवनके मन भायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥१६॥

असमंध अधंध अरंध भये, निरबंध अखंड अगंध ठये।
अमनं अतनं निरवायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥१७॥

निरवर्ण अकर्ण उधर्ण बली, दुखहर्ण अशर्ण सुशर्ण भली।
बलि मोहकी फौज भगायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥१८॥

अविरुद्ध अक्रुध अजुद्ध प्रभु, अति शुद्ध प्रबुद्ध समृद्ध विभू।
परमातम पूरनपायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥१९॥

विररूप चिद्रूप स्वरूप द्युति, जसरूप अनूपम भूप भूती।
कृतकृत्य जगत्रय नायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥२०॥

सब इष्ट अभीष्ट विशिष्ट हितू, उतकिष्ट वरिष्ट गरिष्ट मितू।
शिवतिष्ठत सर्वसहायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥२१॥

जय श्रीधर श्रीधर श्रीवर हो, जय श्रीकर श्रीभर श्रीझर हो।
जय रिद्धि सुसिद्धि बढायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो॥२२॥

(दोहा)

सिद्ध सुगुण को कहि सकै, ज्यों विलस्त नभ मान।
‘हीराचन्द’ तातैं जजै, करहु सकल कल्याण॥२३॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिमुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध-पूजा

(छप्पय राग)

मंगलमय मंगलकरन, शिवपददायक जानिकै।
आह्वानन करके जजौं, सिद्ध सकल उर आनिके॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ! आह्वाननं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(नंदीश्वर श्री जिनधाम--राग)

उज्ज्वल जल शीतल लाय, जिनगुण गावत हैं।
सब सिद्धनकों सु चढाय पुण्य बढावत हैं।
सम्यक् सुक्षायक जान यह गुण गावतु हैं।
पूजौं श्री सिद्ध महान बलि बलि जावतु हैं॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

करपूर सुकेशर सार चंदन सुखकारी।
पूजौं श्री सिद्ध निहार आनंद मन धारी।
सब लोकालोकप्रकाश केवलज्ञान जग्यो।
यह ज्ञान सुगुण मनभास निज रस माँहि पग्यो॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफल की उनहार अक्षत धोय धरे।
अक्षयपद प्रापति जान पुन्य भंडार भरे।
जगमें सुपदार्थ सार ते सब दरसावै।
सो सम्यक् दरशन सार इह गुण मन भावै॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर सु गुलाब अनूप फूल अनेक कहै।
श्री सिद्धकुं पूजत भूप बहु विध पुन्य लहै।
तहां वीर्य अनंतो सार यह गुन मन आनो।
संसारसमुद्रतैं पार कारक प्रभु जानो॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेणी गोझा पकवान मोदक सरस बने।
पूजों श्री सिद्ध महान भूख विथा जु हने।
झलके सब एकहि वार ज्ञेय कहे जितनै।
ये सूक्ष्मता गुणसार, सिद्धनके तितनै॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति जगाय सिद्धनको पूजे।
करि आरती सन्मुख जाय निरमल पद हूजे।
कहुं घाटि न बाढि प्रमाण अगुरुलघु गुण राख्यो।
हम शीस नामवत आन तुम गुण मुख भाख्यो॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप सु दसविधि ल्याय दस दिसि गंध वरै।
वसु कर्म जलावत जाय मानो नृत्य करै।
इक सिद्धमें सिद्ध अनंत सत्ता सब पावै।
यह अवगाहन गुण संत सिद्धन के गावै॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्म दहनाय निर्वपामीति स्वाहा।

ले फल उत्कृष्ट महान सिद्धनको पूजौं।
लहि मोक्ष परम शुभ थान प्रभु सम नहि दूजो।
यह गुण बाधा करी हीन बाधा नास भई।
सुख अव्याबाध सुचीन शिवसुंदर सु लही॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल भरि कंचन थाल अरचत कर जोरी।
प्रभु सुनियो दीनदयाल विनती है मोरी।
करमादिक दुष्ट महान, इनको दूर करो।
तुं सिद्ध सदा सुखदान भव भव दुःख हरो॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

नमों सिद्ध परमातमा, अद्भुत परम विशाल।
निन गुण महिमा अगम है, सरस रची जयमाल॥

(पद्धरि छंद)

जय जय श्री सिद्धनकूं प्रणाम, जय शिवसुख सागरके सुधाम।
जय बलि बलि जात सुरेश जान, जय पूजत तन मन हरष आन॥१॥

जय क्षायिक गुण सम्यक्त्वलीन, जय केवलज्ञान सुगुन नवीन।
जय लोकालोक प्रकाशवान, यह केवल अतिशय हिये आन॥२॥

जय सर्व तत्त्व दरशे महान, सोई दरशन गुन तीजो सुजान।
जय वीर्य अनंतो है अपार, जाकी पटतर दूजो न सार॥३॥

जय सूक्षमता गुण हिये धार, सब ज्ञेय लख्यो एक हि सुवार।
इक सिद्धमें सिद्ध अनंत जान, अपनी अपनी सत्ता प्रमान॥४॥

अवगाहन गुण अतिशय विशाल, तिनके पद वंदूं नमत भाल।
कछु घाटि न बाढि कहे प्रमाण, गुण अगुरुलघु धारे महान॥५॥

जय बाधा रहित विराजमान, सोई अव्याबाध कह्यो बखान।
ए वसु गुण हैं विवहार संत, निश्चय जिनवर भाखे अनंत॥६॥

सब सिद्धनके गुण कहे गाय, इन गुण करि शोभित है जिनाय।
तिनको भविजन मन वचन काय, पूजत वसु विधि अति हर्ष लाय॥७॥

सुरपति फणपति चक्री महान, बलिहरि प्रतिहरि मनरथ सुजान।
गणपति मुनिपति मिल धरत ध्यान, जय सिद्धशिरोमणि जगप्रधान॥८॥

(सोरठा)

ऐसे सिद्ध महान, तुम गुण महिमा अगम है।
वरणन कह्यो बखान, तुच्छ बुद्धि कवि लालजी॥

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं। सिद्धपरमेष्ठिभ्यो महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

(दोहा)

करता की यह वीनती, सुनो सिद्ध भगवान।
मोहि बुलाओ आप ढिंग, यह अर्जी उर आन॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

श्री सिद्ध पूजा

(शार्दुलविक्रीडित)

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिंदु-सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं।
वर्गापूरितदिग्गतांबुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितं।
अंतः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितं।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सोरठा)

मोहि तृषा दुख देत, सो तुमने जीती प्रभु।
जलसे पूजूं मैं तोय, मेरो रोग निवारियो॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने जलम्।

हम भव आतप मांहि, तुम न्यारे संसारसे।
कीज्यो शीतल छांह, चन्दनसे पूजा करूं॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने चन्दनम्।

हम अवगुण समुदाय, तुम अक्षय गुणके भरे।
पूजुं अक्षय ल्याय, दोष नाश गुण कीजियो॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने अक्षतान्।

काम अग्नि है मोहि, निश्चय शील स्वभाव तुं।
फूल चढाऊं मैं तोय, मेरो रोग निवारियो॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने पुष्पम्।

मोहि क्षुधा दुख भूर, ध्यान खड्ग करि तुम हती।
मेरी बाधा चूर, नेवजसे पूजा करूं॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने नैवेद्यम्।

मोह तिमिर हम पास, तुमपै चेतन ज्योति है।
पूजों दीप प्रकाश, मेरो तम निरवारियो॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने दीपम्।

अष्टकर्म वन जाल, मुक्ति मांहि स्वामि सुख करो।
खेऊं धूप रसाल, अष्ट कर्म निवारियो॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने धूपम्।

अन्तराय दुख डाल, तुम अनन्त थिरता लही।
पूजुं फल दरशाय, विघन टाल शिव फल करो॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने फलम्।

हममें आठों हि दोष, जजहुं अर्घ ले सिद्धजी।
दीज्यो वसु गुण मोय, कर जोड्यां द्यानत खड्यो॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम्।

जयमाला

(पद्धरी छंद)

विराग सनातन शांत निरंश, नारमय निर्भय निरंल हंस।
सुधाम विबोधनिधान विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥१॥

विदूरितसंस्कृतिभाव निरंग, समामृतपूरित देव विसंग।
अबंध कषायविहीन विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥२॥

निवारितदुष्कृत कर्मविपाश, सदामलकेवलकेलिनिवास।
भवोदधिपारग शांत विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥३॥

अनंतसुखामृतसागरधीर, कलंक रजोमल भूरिसमीर।
विखण्डितकाम विराम विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥४॥

विकार विवर्जित तर्जित शोक, विबोधसुनेत्रविलोकितलोक।
विहार विराव विरंग विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥५॥

रजोमल खेदविमुक्त विगात्र, निरंतर नित्य सुखामृतपात्र।
सुदर्शनराजित नाथ विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥६॥

नरामरवंदित निर्मलभाव, अनंतमुनीश्वरपूज्य विहाव।
सदोदय विश्वमहेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥७॥

विदंभ वितृष्ण विदोष विनिद्र, परापरशंकर सार वितंद्र।
विकोप विरूप विशंक विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥८॥

जरामरणोज्झित वीतविहार, विचिंतति निर्मल निरहंकार।
अचिन्त्यचरित्र विदर्प विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥९॥

विवर्ण विगंध विमान विलोभ, विमाय विकाय विशब्द विशोभ।
अनाकुल केवल सर्वविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥१०॥

(मालिनी छन्द)

असम-समयसारं चारु चैतन्यचिह्नं,
परपरिणतिमुक्तं पद्मनन्दीन्द्रवन्द्यम।
निखिल-गुणनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं,
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम्॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

अविनाशी अविकार परमरसधाम हो।
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो।
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनंत हो।
जगतशिरोमणि सिद्ध सदा जयवंत हो॥१॥

ध्यानअग्निकर कर्म कलंक सबै दहै।
नित्य निरंजन देव स्वरूपी ह्वै रहे।
ज्ञायकके आकार ममत्व निवारिकैं।
सो परमातम सिद्ध नमूं सिर नायकें॥२॥

(दोहा)

अविचल ज्ञान प्रकाशतें, गुण अनन्तकी खान।
ध्यान धरें सो पाईए, परम सिद्ध भगवान॥३॥

॥ इत्याशीर्वादः। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

सम्यक्‌दर्शन-पूजा

(दोहा)

सिद्ध अष्टगुनमय प्रगट, मुक्त जीव सोपान।
जिह विन ज्ञानचरित अफल, सम्यग्दर्श प्रधान॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(सोरठा)

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरे मल छय करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरे मन शुचि करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रानसुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर शिवफल करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंघाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

आप आप निहचै लखै, तत्त्वप्रीति व्योहार।
रहित दोष पच्चीस है, सहित अष्ट गुण सार॥१॥

(चौपाई)

सम्यक्‌दरसन रतन गहीजे, जिनवचमें संदेह न कीजे।
इहभव विभव चाह दुखदानी, परभव भोग चहै मत प्रानी॥

(गीता छन्द)

प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरमगुरु प्रभु परखिये।
परदोष ढकिये, धरम डिगते को सुथिर कर हरखिये॥
चउसंघ को वात्सल्य कीजे, धरम की परभावना।
गुण आठसों गुन आठ लहिकैं, इहां फेर न आवना॥२॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसहितपंचविंशतिदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्ज्ञान-पूजा

(दोहा)

पंच भेद जाके प्रगट, ज्ञेय प्रकाशन भान।
मोह-तपन-हर-चन्द्रमा, सोई सम्यग्ज्ञान॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्रावतरावतर संवौषट्। ॐ ह्रीं अष्टविध-सम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(सोरठा)

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥२॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥३॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै थिरता करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥४॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै मन शुचि करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥५॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशे महा।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥६॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रान सुखकार, रोग विधन जड़ता हरै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥७॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥८॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥९॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

आप आप जानै नियत, ग्रन्थपठन व्योहार।
संशय विभ्रम मोह बिन, अष्ट अंग गुनकार॥१॥

(चौपाई)

सम्यग्ज्ञानरतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया।
अच्छर शुद्ध अरथ पहिचानौ, अच्छर अरथ उभय संग जानौ॥

(गीता छन्द)

जानौ सुकाल पठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइये।
तप रीति गहि बहु मान देकैं, विनयगुन चित लाइये।
ए आठ भेद करम उछेदक ज्ञानदर्पन देखना।
इस ज्ञानहींसों भरत सीझा और सब पट पेखना॥२॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

❁

सम्यक् चारित्र पूजा

(दोहा)

विषयरोग औषध महा, दवकषाय जलधार।
तीर्थंकर जाको धरें, सम्यक्चारित सार।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट। ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं त्रयोदशविध-सम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(सोरठा)

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै।
सम्यक्चारित धार, तेरहविध पूजौं सदा।।१।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यक्चारित धार, तेरहविध पूजौं सदा।।२।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।
सम्यक्चारित धार, तेरहविध पूजौं सदा।।३।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यक्चारित धार, तेरहविध पूजौं सदा।।४।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै।
सम्यक्चारित धार, तेरहविध पूजौं सदा।।५।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जोति तमहार, घटपट परकाशै महा।
सम्यक्चारित धार, तेरहविध पूजौं सदा।।६।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रान सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यक्चारित धार, तेरहविध पूजौं सदा॥७॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै।
सम्यक्चारित धार, तेरहविध पूजौं सदा॥८॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यक्चारित धार, तेरहविध पूजौं सदा॥९॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

आप आप थिर नियत नय, तप संजम व्योहार।
स्वपर दया दोनों लिये, तेरहविध दुखहार॥१॥

(चौपाई)

सम्यक्चारित रतन सँभालो, पाँच पाप तजिकै व्रत पालो।
पंच समिति त्रय गुपति गहीजै, नरभव सकल करहु तन छीजै॥

(गीता छन्द)

छीजे सदा तनको जतन यह, एक संजम पालिये।
बहु रुल्यो नरक निगोद मांहि, कषाय विषयनि टालिये॥
शुभ करम जोग सुघाट आया, पार हो दिन जात है।
'द्यानत' धरम की नाव बैठो, शिवपुरी कुशलात है॥२॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय-पूजा

(दोहा)

चहुँगतिफणिविषहरमणि, दुखपावक जलधार।
शिवसुखसुधा सरोवरी, सम्यक्त्रयी निहार॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय ! अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

(सोरठा)

क्षीरोदधि उनहार, उज्जल जल अति सोहनो।
जनमरोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजूं॥१॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर गारि, परिमल महा सुरंगमय।
जनमरोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजूं॥२॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल अमल चितार, बासमती सुखदासके।
जनमरोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजूं॥३॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

महकै फूल अपार,अलि गुंजैं ज्यों थुति करै।
जनमरोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजूं॥४॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगंधयुत।
जनमरोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजूं॥५॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप रतनमय सार, ज्योत प्रकाशै जगतमें।
जनमरोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजूं॥६॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुवास विथार, चन्दन अगर कपूर की।
जनमरोग निरवार, सम्यक्‌रत्नत्रय भजूं॥७॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल।
जनमरोग निरवार, सम्यक्‌रत्नत्रय भजूं॥८॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ दरब निरधार, उत्तमसौं उत्तम लियो।
जनमरोग निरवार, सम्यक्‌रत्नत्रय भजूं॥९॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

सम्यक्‌दरशन ज्ञान व्रत, इन बिन मुकत न होय।
अन्ध पंगु अरु आलसी जुदे जलैं दव-लोय॥१॥

(चौपाई १६ मात्रा)

जापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करमबंध कट जावै।
तासों शिवतिय प्रीति बढ़ावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै॥२॥

ताकों चहुँगति के दुख नाहीं, सो न परै भवसागरमांही।
जनम जरा मृतु दोष मिटावै, जो सम्यक्‌रतनत्रय ध्यावै॥३॥

सोई दशलच्छन को साधै, सो सोलहकारण आराधै।
सो परमातम पद उपजावै, जो सम्यक्‌रतनत्रय ध्यावै॥४॥

सोई शक्रचक्रिपद लेई, तीन लोक के सुख विलसेई।
सो रागादिक भाव वहावै, जो सम्यक्‌रतनत्रय ध्यावै॥५॥

सोई लोकालोक निहारै, परमानन्ददशा विसतारै।
आप तिरै औरन तिरवावै, जो सम्यक्‌रतनत्रय ध्यावै॥६॥

(दोहा)

एकस्वरूपप्रकाश निज, वचन कह्यो नहिं जाय।
तीन भेद व्योहार सब, 'द्यानत' को सुखदाय॥७॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

सम्यक दरसन ज्ञान, व्रत शिवमग तीनों मयी;
पार उतारन यान, 'द्यानत' पूजौं व्रतसहित॥८॥

॥ इत्याशीर्वादः। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री धातकीविदेह-भावीजिनपूजा

(जोगीरासा)

धातकी खंड विदेहधाम बहु आनंदमंगलकारी,
ज्यां वर्षे तीर्थंकर प्रभुनो ध्वनि शाश्वत सुखकारी;
तत्र बिराजे त्रिभुवन तारक भाविना भगवंता,
अहो! पधार्या भरतभूमिमां करुणामूर्ति जिणंदा।

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् देवाधिदेव श्री तीर्थंकरदेव ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम् !

(राग : नंदीश्वर श्री जिनधाम)

क्षीरोदधिथी भरी नीर, कंचन कळश भरी,
प्रभु तव पद पूजुं जाय आवागमन टरी;

अहो ! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयागिरि चंदन साथ केसर घसी लाउं,
मम भव आताप नशाव, प्रभु तुज पाय पडुं;
अहो ! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रक्षालित अक्षत शुद्ध, कंचन थाल भरुं,
अक्षय पद प्राप्ति काज प्रभु पद पूज करुं;
अहो ! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

जासुद, चंपा, सुगुलाब, सुरभि थाळ भरुं,
मम कामबाण कर नाश, प्रभु तुज चरण धरुं;
अहो ! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

फेणी खाजा पकवान, मोदक भरी लावुं,
मम क्षुधारोग निरवार, प्रभु सन्मुख जाउं;
अहो ! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूजु मणिदीप हजूर, आतमज्योति जगे,
कर मोह तिमिरने दूर, भवनो भय भागे;
अहो ! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

लई अगर तगर कर्पूर दश विधि धूप करी,
प्रभु सन्मुख खेवुं जाय कर्म कलंक बळी;
अहो ! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पिस्ता किसमिस बादाम, श्रीफळ सोपारी,
मागुं शिवफळ तत्काळ, प्रभुपद बलिहारी;
अहो ! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

करम भरम जगतिमिरको, सूरज ज्योति अनंत;
मम उर भ्रमतम दूर कर, जगनायक जयवंत.

(चाल मंगलकी)

धातकी भावि जिनेश अनंत गुणेशजी,
तुम गुण गावै इन्द्र फणीन्द्र महेशजी;
समोसरनके मध्य सिंहासन राजही,
अंतरीक्ष कमलासन आप बिराजही.

राजही चौसठ चंवर ढुरते, छत्र तीन सुहावने,
तरुवर उत्तुंग अशोक राजै, सर्व शोक नसावने;
सुर पुष्पवर्षा करैं नभसे, देव दुंदुभि बाजही,
जिन प्रभामंडल चक्र चहु दिसि, देखि रवि शशि लाजही.

सुरनर मुनिगण ईस, चरन सेवा करै,
हाथ जोरि नाय शीश हरषि पायन परै;
पूजा अष्ट प्रकार करै, बहु भावसों,
श्री जिनवर गुणगान, करै अति चावसों.

अति चावसों गुणगान करते, सक्र श्रुत पारग बली,
गणराज गुण नहिं पार पावैं, और नरकी क्या चली;
पै भक्तिवश निजशक्ति माफिक, सुविधि जिनगुण गावही,
सो जीव निश्चै सुमन वांछित, सुरग शिवफल पावही.

जिनवर वाणी दिव्य, मनोहर गाजही,
सुरनर अरु तिरयंच सुनो हित काजही;
धर्मामृतको पान करै मन लायकै,
मोह महातम खोय, तरै वृष पाय हैं.

वृषपाय भवि निज भव सुधारै, धरत चारितसारजी,
कोई देशव्रत घरमांहि पालै, तथा व्रत अनगारजी;
बहु भांति जप तप दान पूजा, धर्म सुख दातारजी,
करि यथाशक्ति सुभक्ति सेती, भवि लहै भवपारजी.

तुम प्रभु दीनदयाल, दया मुझ कीजिये,
सरनागत प्रतिपाल, अरज सुन लीजिये,
कृपासिंधु जगदीश, ईश सुध लीजिये,
जगतशीस शिवमहल मोहि प्रभु दीजिये.

दीजे अनूपम अतुल महिमा, धाम शिवमंदिर महा,
अज अमर सिद्ध स्वभाव राजै, नांहि अन्तक बल तहां;
सत् सिद्धि रिद्धि अनंत गुणनिधि, कहत पार न पावही,
जयवन्त जगपति चरन तेरे, नित जिनेश्वर ध्यावही.

(दोहा)

गुण अनंत धारी सदा, तीर्थंकर भगवान;
कृपा प्रभु मुझ पर करी, द्यो अनंतगुण दान.

ॐ ह्रीं धातकीद्वीप-विदेहक्षेत्रस्य भाविजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(शिखरणी छद)

सुनो ज्ञानी प्राणी जगत हितदानी सुजिन हैं,
जजे हैं जे जीवा त्रिविध विधसों कर्मदल हैं;
लिये द्रव्यं सर्वं शुचि अनुपम अष्टविध जे,
लहै भुक्तिं मुक्तिं परम पद सूक्तिं भवतु मे.

॥ इति आशीर्वादः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री महावीर जिन पूजा

हे करुणानिधि सकल गुणाकर, त्रिशलानंदन भवहारी,
तुम पूज रचाउं बलि बलि जाउं, हो अनंत गुण गणधारी
उर निज ध्याउं, शीश नमाउं, गाउं गुण मंगलमय वीर,
भवदुःखहर हो, अनुपम सुखकर हो, आनंदकारी श्री महावीर.

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय ! अत्रावतरावतर संवौषट् (आह्वाननं)

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट (सन्निधिकरणम्)

(छंद त्रिभंगी)

कुंकुम मिश्रित तीरथ जल करी, भरि ल्यायो कंचन झारी।
जन्म--जरा--मृत्तु नाशन कारण, धारात्रय जिनपद ढारी॥
इन्द्र--नरेन्द्र--खगेन्द्र पूज्यपद पूजत हौं जिन मनहारी।
मंगल के कर्ता सब दुःख हर्ता, महावीर आनंदकारी॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलय सुचंदन केलीनंदन, कृष्णा घसि संग सुखकारी।
जिनके पद पूजत भव तप धूजत, भृंग करत झूं झूं प्यारी॥
इन्द्र--नरेन्द्र--खगेन्द्र पूज्यपद पूजत हौं जिन मनहारी।
मंगल के कर्ता सब दुःख हर्ता, महावीर आनंदकारी॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अखित अखंडित सौरभ मंडित, चंद्रकिरणसे भरि थारी।
जिनके पद आगै पूंज करत हौं, अक्षय पदके करनारी॥ इन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचवरणमय कुसुम मनोहर, गंध सुगंधे अति प्यारी।
पूजे जिनपद मन्मथ नासै, भृंग भ्रमत चउ उर भारी॥ इन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खज्ञक फेनी इन्द्र चन्द्रिका, मोदक सुवरण भरि थारी।
क्षुधा वेदनी नाश करनको, जिनपद पूजुं सुखकारी॥ इन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व दिशामें करत प्रकाश जू, दीपक अद्भूत ज्योति धरैं।
ज्ञान उद्योतक मोह विध्वंशक, पूजत भ्रमतम नाश करे॥ इन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन चूर मनोहर, स्वर्ण धूपायन मांहि धरै।
धूप धूम्र मिसि करम उडत मनु, दसूं दिशामें गमन करै॥ इन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोंग बिदाम सु खारिक, कदली दाडिम सहकारं।
स्वर्णथाल भरि जिनपद चहोडे, मुक्ति रमासू ह्वै प्यारं॥ इन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंधाक्षत पुष्प जु नेवज, दीप धूप फल भरि थारी।
अर्घ चढावै जिन चरननकूं जाकी ह्वै शिव तिय प्यारी॥ इन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(गीता छन्द)

जिनवर मुक्त विमुक्त भवस्थिति युक्त मुनिपति ये सदा,
समवादिसरण विभूति मंडित, गुन अखंडित गत मुदा;
भरतक्षेत्रे सुवर्णधामे वीर जिनवर राजही,
तिनकी कहों जयमाल भविजन पढत सब दुःख भाजही.

(पद्धरी छंद)

जय जिन घाते घातिया चार,
फुनि किय अघातियनको प्रहार;
जय चिदानंदमय है सुछन्द,
जगजीवनको आनंदकंद.
अष्टोत्तर शत लक्षण सुअंग,
जिन पति लखि लाजत अनंग;
ये कोटि सूर्य द्युति धरन धीर,
युत प्रातिहार्य वसु गुण गंभीर.
सुर नर धरणीधर पूज्य पाय,
गणधर मुनिवर जिन नमत धाय;
सुर मोक्षादिक पद दान दक्ष,
शुद्ध ध्यान लीन शोभे अलक्ष.
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत,
महा सर्म वीर्य जिनको न अंत;
ये अनंत चतुष्टय करि संयुक्त,
महाधीरय धर वसु कर्म मुक्त.
वसु गुण करि मंडित शोभमान,
जयवंत वर्तो जग प्रधान;

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

जय त्रिशलानंदन जिनेन्द्रवीर,
आनंदकरण भवहरण पीर.
जय वीर जिनेश्वर गुण गंभीर,
कल्पद्रुम सम दाता सुधीर;
जय महावीर वर सिद्धिदाय,
तुम चरणनमें बलि बलि सुजाय.

(गीता छंद)

ये सर्व अतिशय युक्त परम आह्लाद कर पूरन खरे,
ये त्रिजगतापति पाद पूजित, शिवमहल मग पग धरे।
ये द्रव्य गुण नय अर्थ देसक, सुभग शिव त्रिय कंत ते,
जय जय प्रताप सु वीर जिनवर, होहु जग जयवंत वे।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250